जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२७ अंक -७ मार्च २०२५ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ४८ मूल्य - १५० रूपए प्रति

हम सब जैन हैं श्वेताम्बर जैन दिगम्बर हम सब जैन हैं

तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर कोटि-कोटि वंदन्!

'एक राष्ट्र-एक नाम 'BHARAT'

३० मार्च राजस्थान स्थापना दिवस पर

एक बार फिर से..................पधारो सा!

8 वें वर्ष में प्रवेश

आपणों राजस्थान

२९-३० मार्च २०२५

मुंबई की धड़कन अंधेरी में प्राचीनतम राजस्थानी कॉलोनी जे.बी. नगर में
राजस्थानी गीत, नृत्य, संगीत, कला, खानपान के साथ भव्यातिभव्य कार्यक्रम का आयोजन

आयोजक

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं, जय भारत!

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.jinagam.co.in Remove INDIA Name From the Constitution INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए

www.kljindia.com

KLJ Group

Total Solution in Plasticizers & Polymer Compounds

PLASTICIZERS

PHTHALATES | ADIPATES | TRIMELLITATES | CITRATES | STEARATES | SEBACATES | DIBENZOATES | TERE - PHTHALATES | BIO PLASTICIZERS | MALEATES | ESBO

CHLORINATED PARAFFIN (CP)

vLCCP | LCCP | MCCP | SCCP

POLYMER COMPOUNDS

PVC | XLPE-SIOPLAS | XLPE-PEROXIDE | SEMI CONDUCTIVE | EPR | ZHFR | PO | HDPE | PLENE | TPR | TPE | EVA | ENGINEERING PLASTICS | MASTER BATCH - PVC, PE & UNIVERSAL

BENZ PRODUCTS

BENZYL-ALCOHOL | BENZADEHYDE | BENZYL CHLORIDE | DI BENZYL ETHER | BENZYL BENZOATE

CHLOR-ALKALI

CAUSTIC SODA PRILLS | CALCIUM CHLORIDE | CHLORINATED PARAFFINS | HYDROCHLORIC ACID | SODIUM HYPOCHLORITE

PETROCHEMICALS & POLYMER TRADING | REAL ESTATE DEVELOPMENT

Corporate Office:
KLJ House, 8A, Shivaji Marg, Najafgarh Road, New Delhi-110 015, India
Tel.: +91 11 41427427/28/29, Email: delhi@kljindia.com

Branch Offices:
Mumbai | Chennai | Kolkata
Ahmedabad (India) | Singapore | Dubai

Plants:
Silvassa | Bharuch | Agra (India)
Thailand | Qatar

#22-086/KLJ

Madhuban Toyota
A fresh experience in customer delight

TOYOTA

Tariff Card

Monthly Magazine
JINAGAM

Reader Ship
17,000

Readers
All Jains

Release Date
10th date of Every Month

Magazine Size
A4

Print Area
19cm x 24 cm

Print in
Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	55,000/	+ 5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	33,000/	+ 5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	35,000/	+ 5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	31,000/-	+ 5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	32,000/-	+ 5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	40,000/-	+ 5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	8,000/-	+ 5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	22,000/-	+ 5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	12,000/-	+ 5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	6,000/-	+ 5% GST

* Per Insertion

अगला अंक

जैन एकता

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

जय कुमार नृपत्या
व सम्पूर्ण परिवार

A-602, चैतन्य टावर, प्रभादेवी, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400025
दुरध्वनिः 022-2421 0484, (का.) 022-26754331

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

Adv. SUNIL M. KALA JAIN
Mob: 9822034331

Sarvesh Sunil Kala
B. Com. M.B.A
Income tax & GST Consultant
Chh. Sambhajinagar(Aurangabad)

205 Shanta Complex, Nutan Colony,
Aurangabad, Maharashtra, Bharat - 431001

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

BEST COMPLIMENTS FROM:

विश्वा जैन, नीलम जैन,
अम्बरीश जैन, आरती जैन, गौतम जैन, नेहा जैन,
अमित जैन, रेवा जैन

KGOC

kangaro
Stay Sorted.

MUNIX
Smart. Sharp. Sure.

MiLES
a tool for every hand

KOHE
A cut above.

Mfrs. & Exporters : Staplers, Staples, Staple Removers, Paper Punches, Gun Tackers, Tape Tool, Pneumatic Tools, Industrial Staples, Stitching wire, Scissors & Kitchen Essentials etc.

Kangaro Industries (Regd.)
Kangaro Industries Limited
Kanin (India)
Munix (India) Pvt. Ltd.
KGOC Global LLP

B-XXX-6754, Focal Point, LUDHIANA-141 010. (INDIA)
Tel: 91-161-2679000, 6603300, Fax: 91-161-2674903, 2672158
e-mail: info@kgocglobal.com

www.KGOCglobal.com

२८ वें वर्ष में प्रवेश
वर्ष -२७, अंक ७, मार्च २०२५

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
जिनागम

१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मोः ९७०२२ ०५२५२

- 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
- 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

श्वेताम्बर दिगम्बर • **सम्पादकीय** • दिगम्बर श्वेताम्बर

महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर खुशियां बाटें

आज दुनिया में हर कोई किसी न किसी कारण से दु:खी है, कोई शरीर से, कोई परिवार से, कोई धन की कमी से, कोई शिक्षा से, कोई दूसरों को बढ़ता देखकर आदी-आदी से दु:खी है, यह अनादि काल से चला आ रहा है, यानी कि हर कोई, किसी न किसी कारण से दु:खी है, इसका निवारण एक ही है कि हम स्वयं खुश रहें और दूसरों को भी खुश रखें, इसकी शुरुआत हम 'महावीर जन्म कल्याणक पर्व' से करें, क्यों ना हम 'महावीर' बनें, तीर्थंकर 'महावीर' ने अहिंसा का आर्तनाद किया, यानी स्वयं जीएं और दूसरों को भी जीने दें, खुश रहें और दूसरों को भी खुश रखने का प्रयास करें।

एक बार जंगल के 'शेर' ने सोचा कि मेरे जंगल में क्या सभी जानवर खुश हैं, हो सकता है मेरे सैनिक मुझे खुश रखने के लिए झूठ भी बोल सकते हैं? क्यों ना मैं स्वयं अपने जंगल में विचरण कर जांच करुं कि सभी जानवर खुश हैं? शेर निकल पड़ा जंगल में, देखा कि हर कोई झगड़ रहा है, अपने आपको बड़ा बताने के लिए, बिल्ली बोलती है मैं बड़ी, कुत्ता बोलता है मैं बड़ा, जबकि विशालकाय हाथी बोलता है देख मुझे, मेरा शरीर है कितना बड़ा, जंगल के राजा 'शेर' ने सोचा कि हर कोई कह रहा है मैं बड़ा, तू है छोटा, हर कोई लड़ रहा है तो तनाव तो हर एक में है, मैं सबको खुश कैसे रखूं? 'शेर' ने जंगल के सभी जानवरों की सभा बुलाई, सभा में एक ही प्रश्न पूछा गया कि आप सभी मेरी जनता हैं, आप सभी खुश कैसे रह सकते हैं कृपया बताएं? जंगल के जानवर सभी एक दूसरे की तरफ देखने लगे, किसी ने शरीर से तुलना की, किसी ने दिमाग से की, हर किसी ने अपनी-अपनी बात रखी, तो 'शेर' ने कहा कि भाई मैं कहां खड़ा हूं, मैं तो जंगल का 'शेर' हूं, राजा हूं, ना मैं शरीर से छोटा हूं ना ही बड़ा, दिमाग से भी चतुर हूं और आदमखोर भी, तभी तो मैं राजा हूं बस मैं चाहता हूं कि मेरे जंगल के सभी जानवर साथी खुश रहें, कैसे? जो सही उत्तर देगा वह मेरे जंगल का मंत्री बनेगा। जंगल की एक चतुर प्रजाति 'लोमड़ी' ने कहा कि जंगल के राजा शेर जी, मेरे पास एक युक्ति है, हर किसी को सम्मान दिया जाए, हर जानवर एक दूसरे के दु:ख सुख में काम आए, एक दूसरे के बारे में विचार करें। जंगल के राजा 'शेर' ने सोचा, इसमें क्या गलत है, उसने आदेश दिया और कहा कि 'लोमड़ी' जी आज से यही होगा, हर जानवर हर दूसरे का सम्मान करेगा व सुरक्षा भी। जानते हैं प्रतिफल क्या निकला, जब सभी एक दूसरे का सम्मान करने लगे तो सभी खुश रहने लगे और लोमड़ी को जंगल का मंत्री बना दिया गया।

बात कुछ बड़ी नहीं है, अति सूक्ष्म है, हम बड़े तभी बनेंगे जब हम स्वयं के साथ दूसरे का भी सम्मान करेंगे, साथ रहेंगे यही तो तीर्थंकर महावीर ने कहा था कि स्वयं जीएं और दूसरों को भी जीने दें।

संपादकीय की चंद पंक्तियां लिखने का सार भी यही है कि विश्व को अहिंसामय पथ पर चलना होगा, खुश रहना है तो एक दूसरे का सम्मान करना होगा, चाहे परिवार हो या समाज, देश हो या विदेश, हर कोई एक दूसरे को समझें और सम्मान दें, विश्व शांति स्वयं हो जाएगी, तनाव होगा ही नहीं।

संपादकीय अच्छा लगे तो जरूर मुझसे संपर्क करें, मेरा मनोबल बढ़ायें ताकि मेरी लेखनी लिखती रहे, विश्व शांति के लिए, जैन समाज की 'एकता' के लिए..... जय जिनेंद्र।

आपका अपना
जैन एकता का सिपाही
बिजय कुमार जैन

Mob: 9448779151

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Medal Hosiery Centre
283 Old Tharayapet, Bangalore, Karnatka, Bharat - 560053
भारत को 'भारत' ही बोला जाए   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

ಜೈ ಶ್ರೀ ಅಯೋಧ್ಯಾ ರಾಮ ಜೈ ಕಿಷ್ಕಿಂದಾ ಶ್ರೀಹನುಮ ಜಗತ್ತಿನ ಸಂಭ್ರಮ

जया श्री अयोध्या राम | जया श्री किष्किंदा हनुमान

किसान और गाय का संबंध है
जैसा कि श्रीरामा और हनुमानजी
का अनुबंध है

रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम ॥
सुंदर विग्रह मेघश्याम
गंगा तुलसी शालग्राम ॥
भद्रगिरीश्वर सीताराम
भगत-जनप्रिय सीताराम ॥
जानकीरमणा सीताराम
जयजय राघव सीताराम ॥
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम ॥
रघुपति राघव राजाराम
पतित पावन सीताराम ॥

- श्री लक्ष्मणाचार्या
(श्रीराम नारायणम कृति)

होली
की हार्दिक
शुभकामनाएं !

ನಮ್ಮ ಮಳಿಗೆಯ ಯಾವುದೇ ಶಾಖೆಗಳಿಲ್ಲ

SINCE 1988

WE HAVE NO BRANCHES

मारुति मेडिकल्स्
कर्नाटक में दवाईयों का अग्रणी प्रतिष्ठान

SERVICE BEFORE SELF

MARUTHI MEDICALS
THE LEADING MEDICAL STORE OF KARNATAKA

ಮಾರುತಿ ಮೆಡಿಕಲ್
ಕರ್ನಾಟಕದ ಅಗ್ರ ಔಷಧಿ ಮಳಿಗೆ

Call: 080-61222111 +91 76764 44443

ಹಸುವೇ ಸತ್ಯ
ಹಾಲೇ ನಿತ್ಯ
ಉಳಿಸದಿದ್ದರೆ ನಾವೇ ಮಿಥ್ಯ

ಮಾರುತಿ ಮೆಡಿಕಲ್ ದನಿ
अंबा..!..ambaa..!
..ಅಂಬಾ..!
the voice of maruthi medicals
गावो विश्वस्य मातरः

13 & 14, श्रीMoti Building, Service Road, Hampi Nagara, Vijayanagara, Bengaluru-560104

www.maruthimedicals.com

YouTube MAHENDRA MUNOT JAIN

Ambaavoice Maruthi medicals
Mahendra Munot Jain (Ambaa)

TIMINGS - 8:00 AM TO 1:30 MIDNIGHT | NO BREAKS | NO HOLIDAY

ಯೋಚಿಸಿ : ಜಾತೀಯತೆಯಿಂದ ಧರ್ಮ ಹಾಳು ಭ್ರಷ್ಟಾಚಾರದಿಂದ ದೇಶ ಹಾಳು
ಅನೈತಿಕತೆಯಿಂದ ಸಂಸ್ಕೃತಿ ಹಾಳು ಅವಿವೇಕದಿಂದ ಇತಿಹಾಸ ಹಾಳು
ನಿರಭಿಮಾನದಿಂದ ಭಾಷೆ ಹಾಳು ನಿರ್ಲಕ್ಷ್ಯದಿಂದ ಸಮಾಜ ಹಾಳು
ಬೇಜವಾಬ್ದಾರಿಯಿಂದ ಮನೆ ಹಾಳು ಇವೆಲ್ಲವನ್ನೂ ಸಹಿಸಿಕೊಂಡರೆ ನಾವೇ ಹಾಳು

ಗೋವು ಸಂಸ್ಕೃತಿ
ಕ್ಷೀರ ಕನ್ನಡ

ಮೊದಲಾಗಿ ಉಳಿಸೋಣ ಸಂಸ್ಕೃತಿಯನ್ನ
ತಾನಾಗೇ ಉಳಿಯುತ್ತದೆ ಕನ್ನಡತನ

ಧರ್ಮೋ ರಕ್ಷತಿ ರಕ್ಷಿತಃ
ತಾಯಿಯಂತೆ ನೀನು ಧರ್ಮವನ್ನು ರಕ್ಷಿಸು
ಮಗುವಿನಂತೆ ನಿನ್ನನ್ನು ಧರ್ಮ ರಕ್ಷಿಸುತ್ತದೆ

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म

जन्म कल्याणक उत्सव पर

हार्दिक शुभकामनाएं

D. Surendra Kumar

B/o SRI D. VEERENDRA HEGGEDE
DHARMASTHALA
VICE - PRESIDENT
S.D.M Educational Society, Ujire, D.K.

Shrutha Complex, No.19, Primrose Road,
Off. M.G. Road, Behind Prestige Meredian, Bangalore,
Karnataka, Bharat-560025. Ph.: 080-25585037
e-mail : kumar.surendra99@gmail.com

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जंबू प्रसाद जैन ने कीये, आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी दर्शन तीर्थक्षेत्र कमेटी की लगेगी 'प्रसन्न' क्लास

मैनपुरी: आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी कुलचारम से बद्रीनाथ की यात्रा के लिये बढ़ते हुए कुछ दिन मैनपुरी रुके, जहां भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जंबू प्रसाद जैन, राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अशोक दोशी जी ने दर्शन किये और तीर्थ संरक्षण पर चर्चा की, इससे पहले द्रोणगिरि में भी इस पर लम्बी चर्चा 'कुलचारम' के बाद हो चुकी थी, लगातार तीर्थक्षेत्र कमेटी द्वारा कार्य योजना व भविष्य की योजनाओं के प्रति उत्सुकता दिखाने पर आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी जी ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए कहा कि तीर्थक्षेत्र कमेटी कार्यकारिणी के सदस्य अहिच्छेत्र पहुंचे, वहीं महत्वपूर्ण उद्बोधन होगा।

ज्ञात हो कि आचार्य श्री प्रसन्न सागरजी का जहां चातुर्मास होता है, उस तीर्थ की काया-पलट हो जाती है और वे फिर आगे बढते हैं, चाहे वो शिखरजी में स्वर्णभद्र टोंक हो, बीसपंथी कोठी हो या फिर वहां ताले में पड़े चोपड़ा कुंड को खुलवाने की बात हो, 'उदगांव' को एक श्रेष्ठतम तीर्थ का रूप देने के बाद कुलचारम तीर्थ को कैसे आकर्षण रूप में बदला। भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी को जब वे अपने अनुभव से टिप्स देंगे, तो निश्चय ही समाज के ३५० तीर्थों के संरक्षण व सभी की सुरक्षा में एक महत्वपूर्ण पहल होगी। राष्ट्रीय अध्यक्ष जंबू प्रसाद जैन के नेतृत्व में एक वर्ष पहले निर्विरोध रूप से बनी कमेटी के लिये मील का पत्थर साबित हो सकता है। वर्तमान कमेटी लगातार साधु-संतों के दर्शन व उनके साथ तीर्थों की सुरक्षा पर चर्चा की योजना बना कर चल रही है। विदित हो कि तीर्थक्षेत्र कमेटी ही इस समय जैन समाज की सबसे बड़ी प्राचीन संस्था है, जो बिना बंटे अनवरत १२३वें वर्ष में भी कार्यरत है। आगामी २२ अक्टूबर २०२६ से २२ अक्टूबर २०२७ तक, पूरे वर्ष एक महामहोत्सव वर्ष मनाने की भी तैयारियां कर रही हैं, जिसके अंतर्गत २०२५ के वर्षायोग की शुरूआत में हर जगह तीर्थ सुरक्षा कलश स्थापना, वर्षायोग के दौरान तीर्थ सुरक्षा-संरक्षण से संबंधित ९ अंचल में विद्वत-महिला पत्रकार सम्मेलन आयोजित किये जाने की संभावना है।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने 'जिनागम' को बताया कि वर्षायोग, पंचकल्याणक या कोई भी बड़ा महोत्सव हो, उसमें एक हिस्सा तीर्थों की सुरक्षा के लिये रखा जाये, साथ ही एक पुराने तीर्थ को जीर्णोद्धार के लिये गोद लें।

- नरेंद्र अजमेरा,
पियुष कासलीवाल, औरंगाबाद

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें

महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Vijay Transmission Pvt.Ltd.

K.C. Paliwal • S.C. Paliwal • N.C. Paliwal

Mumbai • Delhi • Chennai • Raipur • Hyderabad

Corp. Office:
Plot No 121/3, 8, 12, 13 | Village Kanhera | Urla Acholi Marg | Post Urla | Block Dharsive | Dis. Raipur - 493221
Tel : (0771) 3054900 (30 Lines) | Fax: (0771) 3054932 |
Email: info@vijaytransmission.com

Mumbai Office:
Office No. 706, 7th Floor, Dev Plaza S.V. Road, Above Vijay Sales,
Andheri West, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400058 / Tel.: 022 47763380

Contact Person:
Narendra C. Paliwal • M. 9820023562

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

अहिंसा ही मानव धर्म है : तीर्थंकर महावीर

''मधुरिमा कंठ में न होती तो शब्द विषपान बन गया होता।
आस्था दिल में न होती तो हृदय पाषाण बन गया होता।
प्रभू वीर से लेकर अब तक अगर ऐसा जिन धर्म न मिलता
तो यह संसार वीरान बन गया होता''

अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है। तीर्थंकर महावीर अहिंसा और अपरिग्रह की साक्षात मूर्ति थे। तीर्थंकर महावीर स्वामी ने हमें अहिंसा का पालन करते हुए, सत्य के पक्ष में रहते हुए, किसी के हक को मारे बिना, किसी को सताए बिना, अपनी मर्यादा में रहते हुए पवित्र मन से, लोभ-लालच किए बिना, नियम में बंधकर सुख-दुख में संयमभाव में रहते हुए, आकुल-व्याकुल हुए बिना, धर्म संगत कार्य करते हुए 'मोक्ष पद' पाने की ओर कदम बढाते हुए दुर्लभ जीवन को सार्थक बनाने का संदेश दिया, वे सभी के साथ समान भाव रखते थे और किसी को भी कोई दुःख नहीं देना चाहते थे, पंचशील सिध्दान्त के प्रवर्तक एवं जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी मूर्तिमान प्रतिक थे, जिस युग में हिंसा, पशुबलि, जात-पात के भेदभाव का बोलबाला था, उसी युग में महावीर ने जन्म लिया, उन्होंने दुनिया सत्य एव अहिंसा जैसे खास उपदेशों के माध्यम से सही राह दिखाने की कोशिश की, उन्होंने जो बोला सहज रूप से बोला, सरल एवं सुबोध शैली में बोला, सापेक्ष दृष्टि से स्पष्टिकरण करते हुए बोला, आपकी वाणी ने लोक हृदय को अपूर्व दिव्यता प्रदान की, आपका समवशरण जहाँ भी गया वह कल्याणधाम हो गया।

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं
RATNAMANI METALS & TUBES LTD.

STAINLESS STEEL WELDED/SEAMLESS

Heat Exchanger Tubes(Straight & U)
Instrumentation Tubes, General Piping

CARBON STEEL WELDED PIPES
Longitudinal Submerged, Arc Welded (SAW) Pipes,
Helical/ Spiral (SAW)Pipes, Electric Resistance Welded (ERW)Pipes.
COATING LINES
3 Layer Polyethylene/Polypropylene FBE coating Internal EPOXY coating

Ratnamani is a new-generation, technology-driven company. Guided by its innovative spirit, the company has been able to create its identity amongst the global giants in a short span of time.

Today, Ratnamani operates one of the best equipped process and quality control testing facilities which has enabled the company to offer custom-designed solutions to satisfy a wide range of requirements.

Every product that emerges from the plant undergoes stringent quality and performance tests conforming to international standards backed by timely delivery and after sales services.

This customer centric corporate way of life has made Ratnamani's Tubes & Pipes, the favoured choice of the core sector industries.

We are certified by ISO 9001 : 2000 & PED By LRQA, ISO 14001 : 2004 &
OHSAS 18001 : 2007 By TUV,
API-2B, API-5L & Api-5LC
"Prosperity Through Performance"
17, Rajmugat Society, Naranpura Cross Roads, Ahmedabad, Gujarat, India-380 013
Phone: + 91-79-2741 5501, Fax: +91-79-2748 0999 Email: info@ratnamani.com
Website: www.ratnamani.com

तीर्थंकर महावीर ने प्राणीमात्र की हितैषिता एवं उनके कल्याण की दृष्टि से धर्म की व्याख्या की, आपने कहा

''धम्मो मंगल मुक्किटठं, अहिंसा संजमा तवो''

(धर्म उत्कृष्ट मंगल है, वह अहिंसा संयम तथा तप रूप है)

एक धर्म ही रक्षा करने वाला है, धर्म के सिवाय संसार में कोई भी मनुष्य का रक्षक नहीं है।

धर्म भावना से चेतना शुध्दिकरण होता है। धर्म से वृत्तियों का उन्नयन होता है। धर्म व्यक्ति के आचरण को पवित्र एवं शुध्द बनाता है। धर्म से सृष्टि के प्रति करूणा एवं अपनत्व की भावना उत्पन्न होती है, इसलिए तीर्थंकर महावीर ने कहा,

''एगा धम्म पडिमा, जं से आयो पवज्जवजाए''

अर्थात धर्म ऐसा पवित्र अनुष्ठान है जिससे आत्मा का शुध्दिकरण होता है।

तीर्थंकर महावीर ने मानव भव दुर्लभता का वर्णन करते हुए गणधर गौतम से कहा था कि हे गौतम! सब प्राणियों के लिए चिरकाल में मनुष्य जन्म दुर्लभ है क्योंकि कर्मो का आवरण उतीव गहन है, अंततः इस भाव को पाकर एक क्षण के लिए भी प्रमाद तथा आलस नहीं करना चाहिए, अनेक गतियों और योनियों में भटकते जब जीव शुध्दि को प्राप्त करता है तब कहीं जाकर मनुष्य योनि प्राप्त होती है। तीर्थंकर महावीर का कहना था कि किसी आत्मा की सबसे बड़ी गलती अपने असली रूप को नहीं पहचानना है तथा यह केवल आत्मज्ञान प्राप्त कर ही ठीक की जा सकती है।

मनुष्य को अपने जीवन में जो धारण करना चाहिए वही धर्म है, धारण करने योग्य क्या है? क्या हिंसा, क्रूरता, कठोरता, अपवित्रता, अहंकार, क्रोध, असत्य, असंयम, व्यभिचार, परिग्रह आदि विकार धारण करने योग्य है? यदि संसार का प्रत्येक व्यक्ति हिंसक हो जाए तो समाज का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा तथा सर्वत्र भय, अशांति एवं पाशविकता का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा।

संपूर्ण विश्व में एकमात्र 'जैन धर्म' ही इस बात में आस्था रखता है कि प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है अर्थात् महावीर की तरह ही प्रत्येक व्यक्ति 'जैन धर्म' ज्ञान प्राप्त कर, उसमें सच्ची आस्था रख, उसके अनुसार आचरण कर बड़े पुण्योदय से उसे प्राप्त कर दुर्लभ मानव योनी का एकमात्र सच्चा व अंतिम सुख, संपूर्ण जीवन जन्म-मरण के बंधन से मुक्त होने वाले कर्म करते हुए मोक्ष महाफल पाने हेतु कदम बढ़ाना तथा उसे प्राप्त कर वी महावीर बन, दुर्लभ जीवन को सार्थक कर सकता है।

महावीर ने कोई ग्रंथ नहीं लिखा उन्होंने जो उपदेश दिए, गणधरों ने उनका संकलन किया, वे संकलन ही शास्त्र बन गए, इनमें काल, लोक, जीव आदि के भेद–प्रभेदों का इतना विशुध्द एवं सूक्ष्म विवेचन है कि यह एक विश्व कोष का विषय नहीं अपितु ज्ञान विज्ञान की शाखाओं के अलग-अलग विश्व कोषों का समाहार है।

आज के भौतिक युग में अशांत जन मानस को तीर्थंकर महावीर की पवित्र वाणी ही परम सुख और शांति प्रदान कर सकती है यदि आज संसार के लोग तीर्थंकर महावीर के अहिंसा परमो धर्म, अपरिग्रह और अनेकांतवाद को अपना लें तो प्रत्येक प्रकार की समस्याएं मिट सकती है, शांति स्थापित को सकती है और मानव सुखी रह सकता है।

-कोमल कुमार जैन
लुधियाना

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

परस्परोपग्रहो जीवानाम

परस्परोपग्रहो जीवानाम

'जैन एकता' के लिए प्रथम आवश्यकता है 'श्वेताम्बर एवं दिगम्बर' जैन समाज
विभिन्न क्षेत्रों पर चल रहे मुकदमों को वापस लेवे

अभी तक सिर्फ चर्चाओं तक हम सीमित हैं इसे कार्य रूप में परिणत करना हो तो
दोनों पक्षों को ठोस कार्य करना होगा

दोनों पंथ के प्रतिनिधियों की एक कमेटी बनाई जानी चाहिए जो 'भारत' में चल रहे विभिन्न अदालती मुकदमों के बारे में अंतिम निर्णय ले जो संस्था या पंथ नहीं माने, उसका सार्वजनिक रूप से प्रताड़ित एवं बहिष्कार किया जाना चाहिए।

तभी एकता की बात का कोई मतलब रहेगा, मिलकर प्रयास करें तब ही सफलता मिलेगी।

जय जिनेंद्र! जय भारत!

डॉ. अशोक जैन बड़जात्या

BE, MS(USE), DBM

राष्ट्रीय अध्यक्ष

मो. 09993722222

दिगम्बर जैन महासमिति

५१५ए मिलिन्दा मेनोर, २ आर.एन.टी. मार्ग, इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत-४५२००१

Email : ashok@hindustangroup.com Website : www.hindustangroup.com

तीर्थंकर महावीर : संक्षिप्त परिचय

- च्यवन कल्याणक - आषाढ़ सुदी 6 (प्रातः देवलोक से आये)
- माता एवं पिता - महारानी त्रिशला एवं वैशाली नृप सिद्धार्थ
- चिन्ह (लांछन) - केशरी सिंह
- वंश/कुल/गोत्र - इक्ष्वाकु वंश/ज्ञातृ कुल/काश्यप गौत्र
- जन्म स्थान - बिहार प्रांत में स्थित-कुण्डलपुर
- जन्म कल्याणक - चैत्र शुक्ला 13, विक्रम पूर्व 542/30 मार्च ई.पू.599, अर्द्धरात्रि
- देहवर्ण/देहमान/चिन्ह - सुवर्ण वर्ण/ केशरीसिंह
- जन्म-नाम - राजकुमार वर्धमान
- इन्द्र द्वारा प्रदत्त नाम - महावीर के नाम से अलंकृत
- अन्य नाम - सन्मति, ज्ञातपूत्र, नाणपुत, वीर, अतिवीर, श्रमण, मतिमान, निर्ग्रन्थ, वर्धमान
- भाई-बहन - राजकुमार नंदीवर्धन एवं बड़ी बहन सुदर्शना
- अन्य परिजन - चाचा : सुपार्श्व, मामा : चेटक,
- पुत्री - प्रियदर्शना, जमाताः जमाली
- विवाह - नृप समरवीर की राजकुमारी : यशोदा के साथ (श्वेताम्बर मतानुसार)
- गृहवास/कुमार अवस्था - 28 वर्ष / 30 वर्ष
- राज्य अवस्था - राज्यकाल नहीं
- वर्षीदान - प्रतिदिन एक करोड़ आठ लाख स्वर्ण मुद्रा/ कुल 399 करोड़ एवं अस्सी लाख स्वर्ण मुद्रा
- दीक्षा कल्याणक - मृगसर वदी 10 ई.पू.569 विक्रम पूर्व 512 तीस वर्ष की तरूणाई में राज्य एवं समस्त वैभव का परित्याग करके अकिंचन भिक्षु बने
- दीक्षास्थल/दीक्षासमय - ज्ञातृखण्ड उद्यान में अशोक वृक्ष के नीचे/ मध्याह्न में
- साथ में दीक्षित - कोई नहीं
- तपाराधना - साढ़े बारह वर्षों में केवल 11 माह और 19 दिन आहार ग्रहण किया
- दीक्षा तप - बेला दो उपवास
- दीक्षा प्रदाता (गुरू) - स्वयं
- प्रमुख सिद्धांत - सत्य, अहिंसा और अनेकांतवाद
- विचरण क्षेत्र - पूर्व एवं उत्तर भारत, विदेह जनपद, अंगदेश, काशीराष्ट्र, कुणालदेश, मगधदेश आदि
- दीक्षा पश्चात प्रथम - परमान्न खीर (बहुलद्विज के घर में) पारणे का द्रव्य
- साधनाकाल - साढ़े बारह वर्ष
- साधना काल में कष्ट - देव, दानव, मानव, पशुओं द्वारा उपसर्ग
- कैवल्योत्पत्ति - वैशाख सुदी 10 ई.पू.557 विक्रम पूर्व
- कल्याणक - ऋजु बालुका सरिता के किनारे जृंभिक नगरी के बाहर छद्मम तप के अंतर्गत गोदु हासन में स्थित शालवृक्ष तले
- प्रथम धर्मोपदेश - मध्यम पावापुरी (अपापानगरी) के पवित्र प्रांगण में।
- प्रथम देशना का विषय - यतिधर्म, गृहस्थ धर्म, गणधरवाद
- धर्मोपदेश की भाषा - अर्द्धमागधी प्राकृत (जनसाधारण की भाषा)
- द्वितीय देशना - पावापुरी के महासेन उद्यान में
- विशेषोपलब्धि - एक ही दिन में मध्यम पावापुरी नगर के प्रांगण में 4411 मुमुक्षुओं को अर्हत् धर्म में दीक्षित करना
- कुल चातुर्मास/प्रथम एवं अंतिम चातुर्मास - 42 चातुर्मास/अस्थिकग्राम आश्रम में प्रथम एवं हस्तिपाल राजा की राजधानी पावापुरी में अंतिम चातुर्मास
- प्रथम शिष्य - इंद्रभूति (गौतमस्वामी)
- प्रथम शिष्या - राजकन्या चन्दनबाला
- शिष्य परिवार - गौतम प्रमुख चौदह हजार जिनमें चारों वर्ण के मुमुक्षु शिष्य रूप में सम्मिलित थे
- शिष्या परिवार - आर्या चन्दबाला आदि छत्तीस हजार, जिनमें सभी वर्ग की विदुषी एवं बालिकाएं थी
- प्रमुख श्रावक - आनंद, कामदेव,सद्दाल पुत्र आदि एक लाख उनसठ हजार व्रतधारी श्रावक
- श्राविका समाज - जयंति, सुलसा, रेवती आदि तीन लाख 18 हजार
- प्रमुख भक्तराजा - मगध नरेश बिंबसार (श्रेणिक), वैशाली नरेश चेटक, अवंतिनरेश चंड
- संयम जीवन - बयालीस वर्ष, आयुष्य बहत्तर वर्ष
- निर्वाण कल्याणक - ई.पू.527 विक्रम पूर्व 470 कार्तिक कृष्ण अमावस्या को पावापुरी में हस्तीपाल राजा की दानशाला में दो उपवास की स्थिति में पर्यंकासन में उपदेश देते-देते मध्यरात्रि को निर्वाण।
- तीर्थंकर पार्श्वनाथ एवं महावीर के मध्य अंतरकाल - 250 वर्ष का

तीर्थंकर महावीर का जन्म 'भारत' में हुआ था INDIA में नहीं इसलिए भारत को केवल BHARAT ही बोलें INDIA नहीं!

जय जिनेंद्र! जय भारत!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर

हार्दिक शुभकामनाएं

परस्परोपग्रहो जीवानाम

परस्परोपग्रहो जीवानाम

मानकचंद राठौड़

Oswal Udhyog

C/211-213, Morya House, Off. New Link Road, Andheri (West),
Mumbai - 400053, Maharashtra, Bharat
Phone :08037401898 | Fax :91-22-26744280

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

तीर्थंकर महावीर स्वामी सत्य, अहिंसा, अनेकान्त के महानायक थे

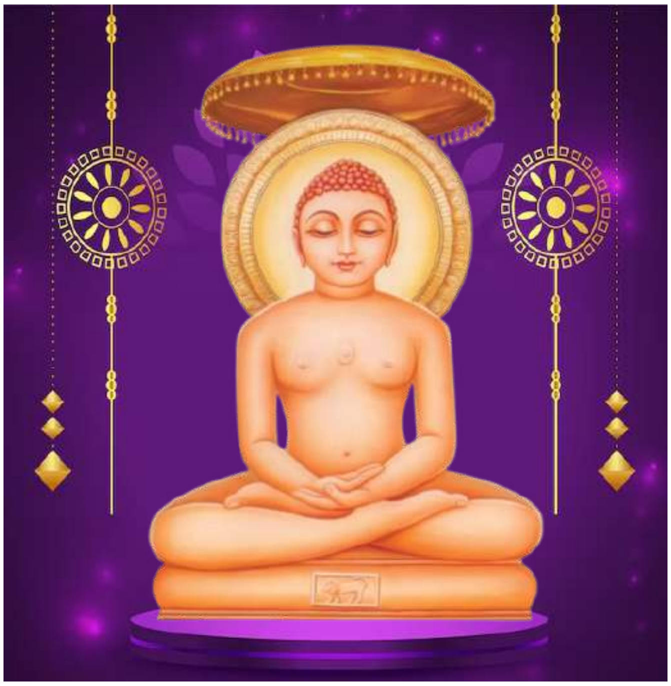

पूरे भारत वर्ष में 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व जैन समाज द्वारा उत्सव के रूप में मनाया जाता है। जैन समाज द्वारा मनाए जाने वाले इस त्यौहार को महावीर जयंती के साथ-साथ महावीर जन्म कल्याणक नाम से भी जानते हैं, 'महावीर जन्म कल्याणक' हर वर्ष चैत्र माह के १३ वें दिन मनाया जाता है, जो अंग्रेजी केलेन्डर के हिसाब से इस वर्ष १० अप्रैल को है, इस दिन हर पंथ के जैन दिगम्बर-श्वेताम्बर आदि एकसाथ मिलकर इस उत्सव को मनाते हैं। तीर्थंकर महावीर के जन्म उत्सव के रूप में मनाए जाने वाले इस त्यौहार में भारत के कई राज्यों में सरकारी छुट्टी घोषित की गयी है।
जैन धर्म के वर्तमान प्रवर्तक तीर्थंकर महावीर का जीवन उनके जन्म के ढाई हजार साल से उनके लाखों अनुयायियों द्वारा पूरी दुनिया को अहिंसा का पाठ पढ़ा रहा है, पंचशील सिद्धान्त के प्रवर्तक और जैन धर्म के चौबिसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी अहिंसा के प्रमुख ध्वजवाहकों में से एक हैं। जैन ग्रंथों के अनुसार २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी के मोक्ष प्राप्ति के बाद २९८ वर्ष बाद तीर्थंकर महावीर स्वामी का जन्म ऐसे युग में हुआ, जहां पशुबलि, हिंसा और जाति-पाति के भेदभाव का अंधविश्वास जारी था।
महावीर स्वामी के जीवन को लेकर श्वेताम्बर और दिगम्बर पंथ में कई तरह के अलग-अलग तथ्य हैं:

तीर्थंकर महावीर के जन्म और जीवन की जानकारी

तीर्थंकर महावीर का जन्म लगभग २६०० वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन क्षत्रियकुण्ड नगर में हुआ, तीर्थंकर महावीर की माता का नाम महारानी त्रिशला और पिता का नाम महाराज सिद्धार्थ था, तीर्थंकर महावीर कई नामों से जाने गए उनके कुछ प्रमुख नाम वर्धमान, महावीर, सन्मति, श्रमण आदि हैं। तीर्थंकर महावीर स्वामी के भाई का नाम नंदिवर्धन और बहन का नाम सुदर्शना था, बचपन से ही महावीर तेजस्वी और साहसी थे। किंवदंतियोंनुसार शिक्षा पूरी होने के बाद माता-पिता ने इनका विवाह राजकुमारी यशोदा के साथ कर दिया गया था।
तीर्थंकर महावीर का जन्म एक साधारण बालक के रूप में हुआ था, इन्होंने अपनी कठिन तपस्या से अपने जीवन को अनूठा बनाया, महावीर स्वामी के जीवन के हर चरण में एक कथा व्याप्त है, 'जिनागम' पत्रिका परिवार उनके जीवन से जुड़े कुछ चरणों तथा उसमें निहित कथाओं को उल्लेखित कर रहा है:

महावीर स्वामी जन्म और नामकरण संस्कार: तीर्थंकर महावीर स्वामी के जन्म के समय क्षत्रियकुण्ड गांव में दस दिनों तक उत्सव मनाया गया, सारे मित्रों-भाई बंधुओं को आमंत्रित किया गया तथा उनका खूब सत्कार किया गया, राजा सिद्धार्थ का कहना था कि जब से महावीर का जन्म उनके परिवार में हुआ, तब से उनके धन-धान्य कोष भंडार बल आदि सभी राजकीय साधनों में बहुत ही वृद्धी हुई, उन्होंने सबकी सहमति से अपने पुत्र का नाम 'वर्धमान' रखा।

महावीर स्वामी का विवाह: कहा जाता है कि महावीर स्वामी अन्तर्मुखी स्वभाव के थे, शुरुवात से ही उन्हें संसार के भोगों में कोई रुचि नहीं थी, परंतु माता-पिता की इच्छा के कारण उन्होंने वसंतपुर के महासामन्त समरवीर की पुत्री यशोदा के साथ विवाह किया, कहीं-कहीं लिखा हुआ यह भी मिलता है कि उनकी एक पुत्री हुई, जिसका नाम प्रियदर्शना रखा गया था।

तीर्थंकर महावीर स्वामी का वैराग्य: तीर्थंकर महावीर स्वामी के माता-पिता की मृत्यु के पश्चात उनके मन में वैराग्य लेने की इच्छा जागृत हुई, परंतु जब उन्होंने इसके लिए अपने बड़े भाई से आज्ञा मांगी तो भाई ने कुछ समय रुकने का आग्रह किया, तब महावीर ने अपने भाई की आज्ञा का मान रखते हुये २ वर्ष पश्चात ३० वर्ष की आयु में वैराग्य लिया, इतनी कम आयु में घर का त्याग कर 'केशलोच' के पश्चात जंगल में रहने लगे। १२ वर्ष के कठोर तप के बाद जम्बक में ऋजुपालिका नदी के तट पर एक साल्व वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान प्राप्त हुआ, इसके बाद उन्हें शेष पृष्ठ १६ पर ...

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP

Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 277777, 260101, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १४ से ... 'केवलि' नाम से जाना गया तथा उनके उपदेश चारों और फैलने लगे। बड़े-बड़े राजा महावीर स्वामी के अनुयायी बनें, उनमें से बिम्बिसार भी एक थे। ३० वर्ष तक महावीर स्वामी ने त्याग, प्रेम और अहिंसा का संदेश फैलाया और बाद में वे जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर बनें और विश्व के श्रेष्ठ तीर्थंकरों में शुमार हुए।

उपसर्ग, अभिग्रह, केवलज्ञान: तीस वर्ष की आयु में तीर्थंकर महावीर स्वामी ने पूर्ण संयम के साथ श्रमण बन गये तथा दीक्षा लेते ही उन्हें केवल ज्ञान प्राप्त हो गया। दीक्षा लेने के बाद तीर्थंकर महावीर स्वामी ने बहुत कठिन तपस्या की और विभिन्न कठिन उपसर्गों को समता भाव से ग्रहण किया।

साधना के बारहवें वर्ष में महावीर स्वामी जी मेढ़िया ग्राम से कोशाम्बी आए तब उन्होंने पौष कृष्णा प्रतिपदा के दिन एक बहुत ही कठिन अभिग्रह धारण किया, इसके पश्चात साढ़े बारह वर्ष की कठिन तपस्या और साधना के बाद ऋजुबालिका नदी के किनारे महावीर स्वामी शाल वृक्ष के नीचे वैशाख शुक्ल दशमी के दिन केवल ज्ञान-केवल दर्शन की उपलब्धि हुई।

तीर्थंकर महावीर और जैन धर्म: महावीर को वीर, अतिवीर और सन्मती के नाम से भी जाना जाता है, वे तीर्थंकर महावीर स्वामी ही थे, जिनके कारण २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों ने एक विशाल धर्म 'जैन धर्म' का रूप धारण किया। तीर्थंकर महावीर के जन्म स्थान को लेकर विद्वानों में कई मत प्रचलित हैं, लेकिन उनके 'भारत' में अवतरण को लेकर एकमत हैं, तीर्थंकर महावीर के कार्यकाल को ईराक के जराथ्रुस्ट, फिलिस्तीन के जिरेमिया, चीन के कन्फ्यूसियस तथा लाओत्से

और युनान के पाइथोगोरस, प्लेटो और सुकरात के समकालीन मानते हैं। भारत वर्ष को तीर्थंकर महावीर ने गहरे तक प्रभावित किया, उनकी शिक्षाओं से तत्कालीन राजवंश खासे प्रभावित हुए और ढेरों राजाओं ने जैन धर्म को अपना राजधर्म बनाया। बिम्बसार और चंद्रगुप्त मौर्य का नाम इन राजवंशों में प्रमुखता से लिया जा सकता है, जो जैन धर्म के अनुयायी बने। तीर्थंकर महावीर ने 'अहिंसा' को जैन धर्म का आधार बनाया, उन्होंने तत्कालीन सनातन समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था का विरोध किया और सबको समान मानने पर जोर दिया, उन्होंने 'जियो और जीने दो' के सिद्धान्त पर जोर दिया, सबको एक समान नजर में देखने वाले तीर्थंकर महावीर अहिंसा और अपरिग्रह के साक्षात मूर्ति थे, वे किसी को भी कोई दु:ख नहीं देना चाहते थे।

महावीर स्वामी के उपदेश :

तीर्थंकर महावीर ने अहिंसा, तप, संयम, पांच **शेष पृष्ठ १७ पर...**

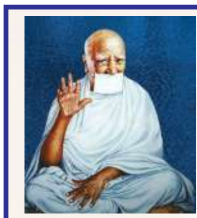

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

राजमल चंगेडिया जैन - सौ. मंगला चंगेडिया जैन
आदेशकुमार चंगेडिया जैन - सौ. प्रियंका चंगेडिया जैन
संभव चंगेडिया जैन व चंगेडिया परिवार
रूपाली गुगळे व शरण्या गुगळे
सौ. दिपाली मुनोत व तनय, दिव्या मुनोत

श्री राजमल श्रीमल
जनरल मर्चेन्ट ॲण्ड कमिशन एजेन्ट
56, मार्केटयार्ड, अहमदनगर, महाराष्ट्र, भारत-414001
भ्रमणध्वनि : 09850995099 / 9373154586
प्रोप्रा. राजमल श्रीमल चंगेडिया जैन
चंगेडिया आऊट डोअर्स
अहमदनगर, महाराष्ट्र, भारत-414001 फोन : 0241-2547070
आदेश चंगेडिया - भ्रमणध्वनि 09822288443, 09011155555

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

परस्परोपग्रहो जीवानाम

SHAIRU GEMS DIAMONDS PVT. LTD.

Importers & Exporters, Diamond Manufacturers

DE-9012 A, (Entrance From DC), 9th Floor,
Bharat Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex,
Bandra East, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400051,
दूरध्वनि : 00-91-22-40505050 : 00-91-22-66460999
Fax : 00-91-22-23633054
अणुडाक : info@shairugems.net
अंतरताना : www.shairugems.com

पृष्ठ १६ से ... महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ती, अनेकान्त, अपरिग्रह एवं आत्मवाद का संदेश दिया। महावीर स्वामी ने यज्ञ के नाम पर होने वाले पशु-पक्षी तथा नर की बली का पूर्ण रूप से विरोध किया तथा सभी जाती और धर्म के लोगों को धर्म पालन का अधिकार बतलाया, महावीर स्वामी ने उस समय जाती-पाति और लिंग भेद को मिटाने के लिए उपदेश दिये।

निर्वाण: कार्तिक मास की अमावस्या को रात्री के समय तीर्थंकर महावीर स्वामी निर्वाण को प्राप्त हुये, निर्वाण के समय तीर्थंकर महावीर स्वामी की आयु ७२ वर्ष की थी।

विशेष तथ्य:

* तीर्थंकर महावीर के जिओ और जीने दो के सिद्धान्त को जन-जन तक पहुंचाने के लिए जैन धर्म के अनुयायी तीर्थंकर महावीर के निर्वाण दिवस को हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को त्यौहार की तरह मनाते हैं, इस अवसर पर वह दीपक प्रज्वलित करते हैं।
* जैन धर्म के अनुयायियों के लिए उन्होंने पांच व्रत दिए, जिसमें अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह बताया गया।
* अपनी सभी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेने की वजह से वे जितेन्द्रिय या 'जिन' कहलाए।
* जिन से ही जैन धर्म को अपना नाम मिला।
* जैन धर्म के गुरूओं के अनुसार तीर्थंकर महावीर के कुल ११ गणधर थे, जिनमें गौतम स्वामी पहले गणधर थे।
* तीर्थंकर महावीर ने ५२७ ईसा पूर्व कार्तिक कृष्णा द्वितीया तिथि को अपनी देह का त्याग किया, देह त्याग के समय उनकी आयु ७२ वर्ष थी।
* बिहार के पावापूरी जहां उन्होंने अपनी देह को छोड़ा, जैन अनुयायियों के लिए यह पवित्र स्थल की तरह पूजित किया जाता है।
* तीर्थंकर महावीर के मोक्ष के दो सौ साल बाद, जैन धर्म श्वेताम्बर और दिगम्बर सम्प्रदायों में बंट गया।
* तीर्थंकर सम्प्रदाय के जैन संत वस्त्रों का त्याग कर देते हैं, इसलिए दिगम्बर कहलाते हैं जबकि श्वेताम्बर सम्प्रदाय के संत श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।

तीर्थंकर महावीर की शिक्षाएं: तीर्थंकर महावीर द्वारा दिए गए पंचशील सिद्धान्त ही जैन धर्म का आधार है, इस सिद्धान्त को अपनाकर ही एक अनुयायी सच्चा जैन अनुयायी हो सकता है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को पंचशील कहा जाता है।

सत्य– तीर्थंकर महावीर ने 'सत्य' को ही महान बताया है, उनके अनुसार, सत्य इस दुनिया में सबसे शक्तिशाली है और एक अच्छे इंसान को किसी भी हालत में 'सच' का साथ नहीं छोड़ना चाहिए, एक बेहतर इंसान बनने के लिए जरूरी है कि हर परिस्थिति में 'सच' बोला जाए। शेष पृष्ठ १८ पर...

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for More Updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

पृष्ठ १७ से... **अहिंसा** – दूसरों के प्रति हिंसा की भावना नहीं रखनी चाहिए, जितना प्रेम हम खुद से करते है उतना ही प्रेम दूसरों से भी करें, अहिंसा का पालन करें।

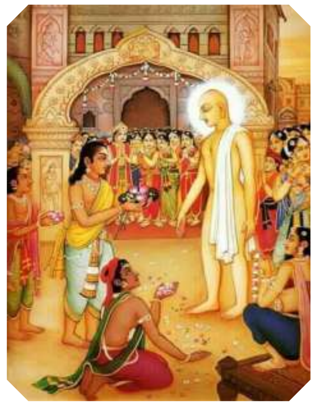

अस्तेय – दूसरों की वस्तुओं को चुराना और दूसरों की चीजों की इच्छा करना महापाप है, जो मिला है उसमें ही संतुष्ट रहें।

ब्रह्मचर्य – तीर्थंकर महावीर के अनुसार जीवन में ब्रहमचर्य का पालन करना सबसे कठिन है, जो भी मनुष्य इसको अपने जीवन में स्थान देता है, वो मोक्ष प्राप्त करता है।

अपरिग्रह – ये दुनिया नश्वर है, चीजों के प्रति मोह ही आपके दु:खों को कारण है, सच्चे इंसान किसी भी सांसारिक चीज का मोह नहीं करते।

१. कर्म किसी को भी नहीं छोड़ते, ऐसा समझकर बुरे कर्म से दूर रहो।

२. तीर्थंकर स्वयं घर का त्याग कर साधू धर्म स्वीकारते हैं तो फिर बिना धर्म किए हमारा कल्याण कैसे हो?

३. तीर्थंकर ने जब इतनी उग्र तपस्या की तो हमें भी शक्ति अनुसार तपस्या करनी चाहिए।

४. तीर्थंकर ने सामने जाकर उपसर्ग सहे तो कम से कम हमें अपने सामने आए उपसर्गों को समता से सहन करना चाहिए।

वर्ष २०२५ में तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व कब है?

वर्ष २०२५ में तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक १० अप्रैल को मनाया जाएगा, जहां भी जैनों के मंदिर हैं, वहां इस दिन विशेष आयोजन किए जाएगें, परंतु 'महावीर जन्म कल्याणक' अधिकतर त्योहारों से अलग, बहुत ही शांत माहौल में विशेष पूजा अर्चना द्वारा मनाया जाता है, इस दिन तीर्थंकर महावीर का विशेष अभिषेक किया जाता है तथा जैन बंधुओं द्वारा अपने मंदिरों द्वारा जाकर विशेष ध्यान और प्रार्थना की जाती है, इस दिन हर जैन मंदिर में अपनी शक्ति अनुसार गरीबों में दान दक्षिणा का विशेष महत्व है।

भारत में गुजरात, राजस्थान, बिहार, महाराष्ट्र और कोलकाता, आसाम व भारत के कई राज्यों में आदि में उपस्थित प्रसिध्द मंदिरों में 'महावीर जन्म कल्याणक' उत्सव विशेष रूप से मनाया जाता है।

तीर्थंकर महावीर के प्रमुख ग्यारह गणधर

श्री इंद्रभूती जी	श्री अग्निभूति जी
श्री वायुभूति जी	श्री व्यक्त स्वामीजी
श्री सुधर्मा स्वामीजी	श्री मंडितपुत्रजी
श्री मौर्यपुत्र जी	श्री अकम्पित जी
श्री अचलभ्राता जी	श्री मोतार्यजी
श्री प्रभासजी	

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Babulal Jain

Nirmala Jain

BABULAL JAIN
भ्रमणध्वनि : 09314336626

TRADE CENTRE
AUTHORISED DEALER :

- Jyoti Ltd.
- Kirloskar Brothers Ltd.
- DEC China
- L&T Limited
- Wilo Mather& Platt
- Shanthi Gears Limited
- Hindustan Composites Ltd.
- Raychem RPG Pvt. Ltd.
- Voith Turbo
- Sulzer Pumps India Pvt.Ltd.
- Beijing Power Equipment China
- Emerson India Pvt. Ltd.
- Forbes Marshall Pvt. Ltd.
- Victaulic Coupling
- Shell India Pvt. Ltd.
- W.H Brady &Company Ltd.

Trade Centre,Nirmala Tower, 2nd Floor, 288, Shopping Centre
Kota, Rajasthan, Bharat - 324007
अणुडाक : tradeneeraj@gmail.com

महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

मुनिपुंगव श्री सुधा सागर बालिका छात्रावास
पुण्योदय अतिशय तीर्थक्षेत्र नसियां जी दादाबाड़ी, कोटा (राजस्थान)
-: प्रवेश प्रारम्भ :-
वातानुकूलित (AC) रूम, अटैच लेटबाथ, सिंगल एवं डबल रूम, कोचिंग तक आने जाने की सुविधा, 24 घन्टे महिला सुरक्षा गार्ड, पूर्ण सुरक्षित परिसर शुद्ध सात्विक भोजन। 24 घंटे 3 जैन महिला वार्डन, मन्दिर परिसर में स्थित गिर गाय गौशाला का शुद्ध दुध दोनो वक्त, लाइब्रेरी कक्ष, वार्किंग ट्रेक, माता, पिता के रूकने के लिए डोरमेट्री, आर्युवेदिक औषधालय, एलोपैथिक डॉ., होम्योपेथिक डॉ., नेत्र डॉ., ब्लडसेम्पल जॉच लेबोरेट्री सभी की रोज प्रातः 8-10 की सुविधा परिसर में ही उपलब्ध। परिसर में पार्क सुविधा उपलब्ध शुद्ध सात्विक भोजन, प्रातः में नाश्ता, दूध, संडे को स्पेशल कपड़ों की ड्राई क्लीन हॉस्टल में ही पीसे शुद्ध मसाले, आटा, बेसन हॉस्टल में ही बनी हुई मिठाई, नमकीन, अचार, छाछ एवं फल वातानुकूलित भोजनशाला में उपलब्ध
सम्पर्क:- 9829038906, 9799521154, 6376531154, 8690849107

अध्यक्ष व शिरोमणी संरक्षक	निर्देशक	कोषाध्यक्ष
श्रीमती अर्चना जैन (रानी) दुगेरिया सर्राफ परम संरक्षक डॉ. संतोष जैन	श्रीमती उषा जैन बाकलीवाल सचिव श्रीमती निशा जैन वेद	श्रीमती छाया जैन हरसोरा एवं समस्त छात्रावास परिवार

!! ॐ अर्हम् !!
त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार, महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

J.L. CHORARIA & FAMILY

CA Jawaharlal Choraria
Mob: 9433084855/ 7044019664

J.L. Choraria & Associates
Chartered Accountants

88, Manicktala Main Road, 8th Flor,
Kolkata, West Bengal, Bharat-700054
Email- jlchoraria23@rediffmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए   Remove 'INDIA' Name From The Constitution

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को
कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Manoj Kumar Daga
Mobile : 9845062865

Qualityplus Star Krraft Corporation

#46, Manchanayakahalli, Grama Panchayath,
Beemanahalli, Village, Bidadi Hobli , Dist. Ramanagar,
Bengaluru, Karnataka, Bharat - 562109
Mob. : 8861135836

Res. : Flat #3A, Rajeshwari Homes Apts, 10th Cross,
Ideal Homes Society, Rajarajeshwari Nagar, Bengaluru,
Karnataka, Bharat - 560098
Ph. : 080-28602078

भारत को 'भारत' ही बोला जाए   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

कमलसिंह रामपुरिया

अध्यक्ष-जैन श्वेताम्बर सोसायटी
भ्रमणध्वनि: ९८३१००९४७०

17/3, मुखराम कानोडिया रोड, हावड़ा, प. बंगाल, भारत-711101
दूरध्वनि-033-26667212

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार
महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

DR. D.R. MEHTA
Founder & Chief Patron

PRAKRIT BHARTI ACADEMY

* धार्मिक, आध्यात्मिक, साहित्यिक एवं बालोपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन
* पुस्तकालय एवं वाचनालय

13, Main Road, Malviya Nagar,
Jaipur, Rajasthan, Bharat- 302017
Mob: 09314566665
Email: prabharati@gmail.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

तीर्थंकर महावीर का दिव्य संदेश

स्वयं जीयो और दूसरे को भी जीने दो

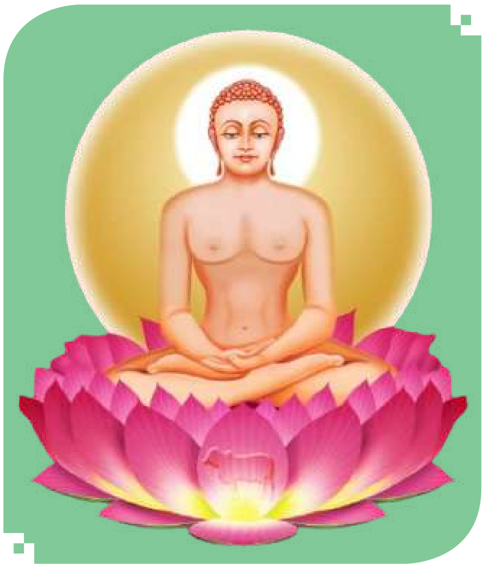

तीर्थंकर महावीर स्वामी का जन्म कल्याणक 'महावीर जयन्ती' के नाम से भी प्रसिद्ध है। महावीर स्वामी का जन्म चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में हुआ था। ईस्वी कालगणना के अनुसार तत्कालीन सोमवार, दिनांक २७ मार्च, ५९८ ईसा पूर्व के माँगलिक प्रभात में वैशाली के गणनायक राजा सिद्धार्थ के घर महावीर का जन्म हुआ था।

महावीर स्वामी का तीर्थंकर के रुप में जन्म उनके पिछले अनेक जन्मों की सतत् साधना का परिणाम था, कहा जाता है कि एक समय महावीर का जीव पुरुरवा भील था, संयोगवश उसने सागरसेन नाम के मुनिराज के दर्शन किए, मुनिराज रास्ता भूल जाने के कारण उधर आ निकले थे। मुनिराज के धर्मोपदेश से उसने धर्म धारण किया। महावीर के जीवन की वास्तविक साधना का मार्ग यहीं से प्रारम्भ होता है, बीच में उन्हें कौन-कौन से मार्गों से जाना पड़ा, जीवन में क्या-क्या बाधाएँ आईं और किस प्रकार भटकना पड़ा? यह एक लम्बी और दिलचस्प कहानी है जो सन्मार्ग का अवलम्बन कर, जीवन के विकास की प्रेरणा देती है। महावीर स्वामी का जीवन हमें एक शान्त पथिक का जीवन लगता है जो कि संसार में भटकते-भटकते थक गया है। भोगों को अनन्त बार भोग लिये, फिर भी तृप्ति नहीं हुई, अत: भोगों से मन हट गया, अब किसी जीज की चाह नहीं रही, परकीय संयोगों से बहुत कुछ छुटकारा मिल गया, अब जो कुछ भी रह गया उससे भी छुटकारा पाकर, महावीर मुक्ति की राह देखने लगे।

एक बार बालकों के साथ बहुत बड़े वटवृक्ष के ऊपर चढ़कर खेलते हुए वर्धमान के धैर्य की परीक्षा करने के लिए संगम नामक देव, भयंकर सर्प का रुप देख सभी बालक भाग गए, किन्तु वर्धमान इससे जरा भी विचलित नहीं हुए, वे निडर होकर वृक्ष से नीचे उतरे। संगमदेव उनके धैर्य और साहस को देखकर दंग रह गया, उसने अपना असली रुप धारण किया और महावीर स्वामी नाम की स्तुति कर चला गया।

महान् पुरुषों का दर्शन ही संशयचित लोगों की शंकाओं का निवारण कर देता है। संजय और विजय नामक दो चारण ऋद्धिधारी देव थे, जिन्हें तत्त्व के विषय में कुछ शंका थी। कुमार वर्द्धमान को देखते ही उनकी शंका दूर हो गई, उन देव ने प्रसन्नचित हो कुमार का सन्मति नाम रखा।

एक दिन ३० वर्ष का वह त्रिशलानन्दन कर्मों का बन्धन काटने के लिए तपस्या और आत्मचिन्तन में लीन रहने का विचार करने लगा, कुमार की विरक्ति का समाचार सुनकर माता-पिता को बहुत चिन्ता हुई। कलिंग के राजा जितशत्रु ने अपनी सुपुत्री यशोदा के साथ कुमार वर्द्धमान के विवाह का प्रस्ताव भेजा, उनके इस प्रस्ताव को सुनकर माता-पिता ने जो स्वप्न संजोए थे, आज वे स्वप्न उन्हें बिखरते हुए नजर आ रहे थे। वर्धमान को बहुत समझाया गया, अन्त में माता-पिता को मोक्षमार्ग की स्वीकृती देनी पड़ी। मुक्ति के राही को भोग जरा भी विचलित नहीं कर सके। तत्कालीन मंगशिर कृष्ण दशमी सोमवार, २९ दिसम्बर ५६९ ईसा पूर्व को मुनिदीक्षा लेकर वर्द्धमान स्वामी ने शालवृक्ष के नीचे, तपस्या आरम्भ कर दी, उनकी तप साधना बड़ी कठिन थी।

महावीर की साधना मौन साधना थी, जब तक उन्हें पूर्ण ज्ञान की उपलब्धि नहीं हो गई तब तक उन्होंने किसी को उपदेश नहीं दिया। तत्कालीन वैशाख शुक्ल दशमी, २६ अप्रैल, ५५७ ईसा पूर्व का वह दिन चिरस्मरणीय रहेगा जब त्रृम्बक नामक ग्राम में अपराह्न समय गौतम, उनके प्रमुख शिष्य (गणधर) हुए, उनकी धर्मसभा समवसरण कहलाई, इसमें मनुष्य, पशु-पक्षी आदि सभी प्राणी उपस्थित होकर धर्मोपदेश का लाभ लेते थे। लगभग ३० वर्ष तक उन्होंने सारे भारत में भ्रमण कर लोकभाषा प्राकृत में सदुपदेश दिया और कल्याण का मार्ग बतलाया, संसार-समुद्र से पार होने के लिए उन्होंने तीर्थ की रचना की, अत: वे तीर्थंकर कहलाए।

आचार्य समन्तभद्र ने भगवान् के तीर्थ को सर्वोदय तीर्थ कहा है, व्यक्ति के हित के साथ-साथ महावीर के उपदेश में समष्टि के हित की बात भी निहित थी। उनका उपदेश मानवमात्र के लिए ही सीमित नहीं था, बल्कि प्राणिमात्र के हित की भावना उसमें निहित थी। महावीर! श्रमण परम्परा के उन व्यक्तियों में से एक थे, जिन्होंने यह उद्घोष किया था कि हर प्राणी एक समान है। मनुष्य और क्षुद्र कीट-पतंग में आत्मा के अस्तित्व की अपेक्षा में कोई अन्तर नहीं, उस समय जबकि मनुष्य के बीच में भी दीवारें खड़ी हो रही थीं, किसी वर्ण के व्यक्ति को ऊँचा और किसी को नीचा बतलाकर, एक वर्ग विशेष का स्वत्वाधिकार कायम किया जा रहा था, उस समय मानवमात्र का प्राणिमात्र के प्रति समत्वभाव का उद्घोष करना, बहुत बड़े साहस की बात थी, तत्कालीन अन्य परम्परा के लोगों द्वारा इसका घोर विरोध हुआ, अन्त में सत्य की ही विजय हुई। करोड़ों-करोड़ों पशुओं और दीन-दु:खियों ने चैन की सांस ली। समाज में अहिंसा का महत्व पुर्नस्थापित हुआ।

महावीर स्वामी ने नारा बुलन्द किया था कि प्रत्येक आत्मा परमात्मा बन सकती है, कर्मों के कारण आत्मा का असली स्वरुप अभिव्यक्त नहीं हो पाता। कर्मों को नाशकर शुद्ध, बुद्ध और सुखरुप स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है, इस प्रकार तीस वर्षों तक तत्त्व का भली-भाँति प्रचार करते हुए तीर्थंकर महावीर एक समय मल्लों की राजधानी पावा पहुँचे, वहाँ के उपवन में तत्कालीन कार्तिक कृष्ण अमावस्या मंगलवार, १५ अक्टूबर, ५२७ ई.पू. को ७२ वर्ष की आयु में उन्होंने निर्वाण प्राप्त कर लिया।

- सुशीला पाटनी जैन
मदनगंज-किशनगढ़, राजस्थान, भारत

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें

महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

ASHOK JAIN - CMD

WAGAD

WAGAD INFRAPROJECTS PVT. LTD.

414, The Time Square Arcade, Near Baghban Party Plot,
Thaltej - Shilaj Road, Ahmedabad, Bharat - 380 059
Ph: 079-3521 2802 | Email: admin@wagadinfra.com/ Email: ashokjain@wagadinfra.com

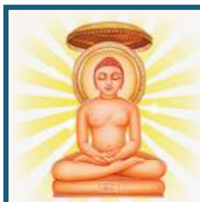

अहंकार महाअग्नि है,
जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर

हार्दिक शुभकामनाएं

Ashok Pushpa Babel (Jain)
Hardik Renu Babel
Anaya Viona
Mahak Caitee Babel (USA)
Axal
Riddhi Anchit Pandya (USA)

Beauty Jewellers

Off.: Goregaon (East), Mumbai-400063

Resi.: B-401, 402 Oberoi Garden, Thakur Village,
Kandivali East, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400101
Mob: 98210 69406, 9820027258

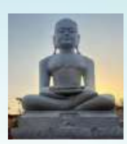

श्री १००८ आदिनाथ भगवान
२१ फीट ऊँची पद्मासन
(काकोरी लखनऊ)

श्री १००८ पार्श्वनाथ भगवान
मूलनायक (काकोरी लखनऊ)

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर

हार्दिक शुभकामनाएं

कैलाश जैन भारती - श्रीमती सन्तोष जैन
सन्दीप जैन - श्रीमती सलौनी जैन
भारतेन्दु जैन - श्रीमती ज्योती जैन,
सन्मति जैन - श्रीमती अनुष्का जैन

अरिहन्त इण्डस्ट्रीज

४१०/९३, नाई बाड़ा चौक, लखनऊ, उत्तरप्रदेश, भारत-२२६००३
भ्रमण्ध्वनि : ९४५२०१७९८४, ९४१५०६१३५६, ९४५२०१७९८५

भारत को 'भारत' ही बोला जाए   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

नागराज चण्डकौशिक के उद्धारक प्रभु महावीर

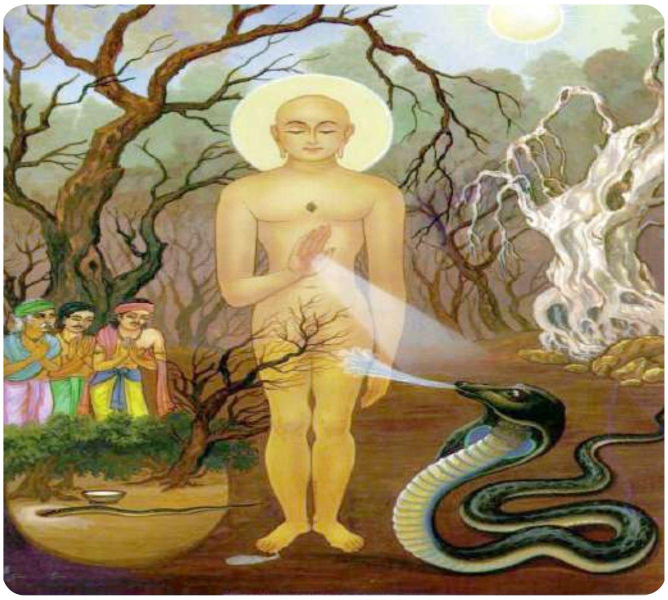

प्राचीन काल में एक तपस्वी श्रमण था- नाम था गोभद्र, वह बहुत तप किया करता था। एक-एक माह के उपवास करता था। भिक्षा से प्राप्त आहार ही वह ग्रहण करता था। एक बार भिक्षा लेने जा रहे गोभद्र के पावों के नीचे मेंढकी आ गयी और वह वहीं पर मर गई। गोभद्र के पीछे चल रहा उनका शिष्य यह दृश्य देख रहा था। गुरु की कोई प्रतिक्रिया न देख शिष्य ने सोचा कि शायद गुरु इस घटना से अनभिज्ञ हैं, अत: सरल, सहजस्वभावी शिष्य ने गुरु से निवेदन किया, गुरुदेव! एक मेंढकी आपके पैर के नीचे दब कर मृत्यु को प्राप्त हो गई है, अत: आप कृपया पाप का प्रायश्चित ले लें। शिष्य द्वारा कही गई हितकारी वाणी भी गुरु को अच्छी नहीं लगी, वे क्रोधित हो उठे, ''अरे, अभद्र शिष्य! गुरु के प्रति अविनय करता है, मैंने कोई मेंढकी नहीं मारी है'' शिष्य चुप हो गया, विचार करने लगा कि गुरुदेव का क्रोध शांत होने पर वे स्वयं ही प्रायश्चित ले लेंगे।

शाम हो गई, सायंकालीन प्रतिक्रमण का समय हो गया, अब तक गोभद्र ने प्रायश्चित नहीं लिया था। सरलहृदय शिष्य ने पुन: गुरु को आलोचना कर लेने का स्मरण करवाया। गोभद्र यह सुन आपे से बाहर हो गया, क्रोध में अंधा हो गया, अपना रजोहरण लेकर अपने शिष्य को मारने दौड़ा। शिष्य घबरा कर वहाँ से भागा। अंधेरे में गोभद्र एक खम्भे से टकरा गया, उसका सिर फट गया और वह वहीं मर गया। क्रोध-दशा में मृत्यु होने के कारण वे ज्योतिषी देव बने। ज्योतिषी देव की आयु पूर्ण कर वे कनकखल आश्रमपद के कुलपति के पुत्र के रुप में जन्मे। कुलपति ने पुत्र का नाम कौशिक रखा। कौशिक क्रोधी प्रवृत्ति का था, अत: आश्रम के लोग उसे चण्डकौशिक के नाम से पुकारने लगे।

एक दिन श्वेताम्बी के कुछ राजकुमार विचरण करते-करते आश्रम के उद्यान में आ पहुँचे। उद्यान में राजकुमार सुंदर फूलों को तोड़ने लगे। चण्डकौशिक ने राजकुमारों को फूल तोड़ने से रोका। राजकुमारों ने उसकी अनदेखी-अनसुनी की व फूल तोड़ना जारी रखा। चण्डकौशिक क्रोधी स्वभाव का तो था ही, तुरन्त क्रोधित हो उठा, वह राजकुमारों को मारने के लिए हाथ में कुल्हाड़ा लिए उनके पीछे भागा। राजकुमार तुरन्त भाग गए, किन्तु चण्डकौशिक उनका पीछा करता हुआ एक खड्डे में जा गिरा। कुल्हाड़े से सिर में गंभीर चोट लगने से चण्डकौशिक की वहीं मृत्यु हो गई।

अपने उद्यान से अत्यधिक आसक्ति थी चण्डकौशिक को, अत: अत्यन्त क्रोध की अवस्था में मृत्यु हो जाने के कारण चण्डकौशिक उसी उद्यान में दृष्टिविष सर्प बन कर जन्म लिया। दृष्टिविष सर्प अत्यन्त विषैला काला नाग था, अपने विष की ज्वालाओं से उसने अनेक मनुष्यों को भस्म कर दिया था, उसकी विशैली फुंकारों से उद्यान के पेड़-पौधे, लताएं, फूल आदि वनस्पति जल कर राख हो गई थी। सर्प की जहरीली ज्वालाओं की चपेट में आकर सारा उद्यान वीरान, निर्जन-उजाड़ हो गया, न तो वहाँ कोई वनस्पति ही बची, न ही उधर से गुजरने वाला कोई राहगीर। सारा जंगल नाग से आतंकित हो गया, मनुष्यों ने उस मार्ग से आना-जाना बन्द कर दिया था।

इसी काल में भगवान महावीर स्वामी कठोर साधना में लीन थे, उनका साधना काल साढ़े १२ वर्ष लगभग चला, इस साधना काल में प्रभु ने क्षमा, सहिष्णुता, सत्य, अहिंसा, अभय के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए। एक बार प्रभु महावीर मोराक सन्निवेश से उत्तरवाचाला नामक स्थान पर जा रहे थे, उत्तरवाचाला जाने के दो मार्ग थे-एक सीधा व लघु मार्ग व एक टेढ़ा व लम्बा मार्ग था। प्रभु ने उत्तरवाचाला जाने के लिए सीधे वाले मार्ग पर कदम बढ़ाए, यह मार्ग कनकखल नामक आश्रम पद के बीच से गुजरता था, जहाँ पर दृष्टिविष सर्प रहता था।

जंगल में पशु चराते हुए कुछ ग्वालों ने प्रभु को उस मार्ग पर जाते देखा। ग्वाले घबरा गए, उन्होंने प्रभु से निवेदन किया हे देव! कृपया आप इस मार्ग पर आगे न बढ़ें, इस मार्ग में एक अत्यन्त विषैला दृष्टिविष सर्प रहता है, उसने अनेक राहगीरों को, पशुओं को, हजारों पेड़ों, वृक्षों, फूलों, फलों को अपनी विषभरी फुंफकारों से जला कर भस्म कर दिया है। कृपा कर आप दूसरा मार्ग पकड़ें, जो टेढ़ा, लम्बा अवश्य है किन्तु सुरक्षित है।

रेंगता हुआ नाग तुरन्त अपनी बाम्बी के बाहर निकला। जंगल में एक मनुष्य को, वो भी आंखे मूंदे स्थिर खड़ा देख, दृष्टिविष सर्प विस्मय में पड़ गया। विचार करने लगा कि इस वन में कभी कोई मानव आता ही नहीं, यह शायद मार्ग भटक कर इधर आ गया है, इसकी मृत्यु निकट है, इसलिए यह मेरी बाम्बी के पास ही ध्यान मुद्रा में खड़ा हो गया है। सर्प को अत्यन्त क्रोध आया, आखिर विषधर तो विषधर ही था, उसने प्रभु महावीर पर जहरीली तीव्र दृष्टि डाली, उसकी विषाक्त आंखों से विषयुक्त प्रचण्ड ज्वालाएँ निकलने लगी जो किसी भी साधारण मानव को एक क्षण में भस्म कर सकती थी वे ज्वालाएँ, किंतु वीतरागी प्रभु पर इन प्रचण्ड ज्वालाओं का लेश मात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा। वे स्थिर अपने स्थान पर ध्यानस्थ रहे। प्रभु पर कोई असर न होता देख दृष्टिविष सर्प ने अपनी दृष्टि को सूर्य की ओर करके तीखी दृष्टि से महावीर की ओर देखा। प्रभु महावीर पर यह वार भी अप्रभावी रहा। दूसरा प्रहार भी खाली जाता देख सर्प और क्रोधित हो उठा। दृष्टिविष सर्प ने अपना फन फैलाया व पूरी शक्ति के साथ महावीर के पैर के अंगूठे को डंस लिया। महावीर अब भी अविचलित शान्त भाव से खड़े रहे। **शेष पृष्ठ २३ पर...**

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को
कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व
पर हार्दिक शुभकामनाएं

Rajesh Doshi
Mob: 9324242388

ANJALI®
Since 1974

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Rajendra Gangwal
9322287070
Renu jain Gangwal
8369778878

R.K.INTERNATIONAL
Manufacturer's, Representative
& Project Co-ordinators

A-201, Madhu Milan, Opp. Devki Nagar, Eksar Rd.,
Borivali West, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400103.
Tel.: 022-28950278

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

पृष्ठ २२ से... श्रमण महावीर के पैर के अंगूठे से रक्त के स्थान पर श्वेत दूध-सी धारा बह निकली। नागराज अचरज भरी दृष्टि से कभी महावीर को व कभी दूध की धारा को देखता रहा, विचार में डूब गया कि ये महापुरुष कौन है, जिन पर मेरे आक्रमणों का कोई प्रभाव नहीं हुआ।

महावीर अब अपने ध्यान को समाप्त कर चुके थे, उन्होंने अत्यन्त वात्सल्य एवं ममता भरी नजरों से नागराज की ओर देखा। महावीर के श्री मुख पर शांति स्थापित थी। नागराज पर महावीर की शीतलता, माधुर्य, ममता एवं वात्सल्य का प्रभाव पड़ने लगा, उसको भी शांति एवं शीतलता प्राप्त हो रही थी।

महावीर ने नागराज को सम्बोधित करते हुए कहा, जागो, जागो चण्डकौशिक! क्रोध को शान्त कर दो। तुम शान्त हो जाओ। ''चण्डकौशिक को यह नाम कुछ सुना हुआ सा लगा'' महावीर का अमृतमय उद्बोधन श्रवण कर चण्डकौशिक का क्रोध शान्त हो चुका था। प्रभु ने उसे जातिस्मरण करवाया। वह पूर्णत: शान्त हो विचारों में उतरता चला गया व उसे जाति स्मरण हो आया। अपने पूर्व जन्मों की समस्त घटनाएँ उसकी स्मृति में चित्रित हो गईं, उसे आभास हो गया कि पूर्व जन्मों में भी क्रोध के कारण ही उसकी दुर्गति हो गई थी। महावीर ने उसे आत्मकल्याण का मार्ग बताया। चण्डकौशिक की अर्न्तचेतना जाग्रत हो गई, उसे अपनी त्रुटियों का एहसास हो गया था, वह प्रभु के चरणों में लिपट कर अपने द्वारा किए गए पापों की क्षमा मांगने लगा, प्रायश्चित करने लगा।

चण्डकौशिक शान्त हो चुका था, अगली सुबह ग्वाले यह देखकर अत्यन्त आश्चर्यचकित रह गए कि श्रमण महावीर को सर्प ने भस्म नहीं किया वरन् वे स्थिर, शान्तचित्त खड़े हैं। नागराज भी अपनी बाम्बी में मुँह डालकर शान्त-स्थिर पड़ा है। कौतूहलवश उन्होंने नागराज पर पत्थर-कंकड़ भी मारे, किंतु यह क्या! इतना भयंकर दृष्टिविष सर्प शान्त एवं स्थिर है, कोई प्रतिक्रिया नहीं दे रहा है। निष्प्राण जीव की भांति पड़ा हुआ है। सभी ग्वालों को विदित हो चुका था कि श्रमण महावीर के प्रभाव से नागराज पूर्णत: शान्त हो चुका था। ग्वालों ने यह समाचार सारे नगर में प्रसारित कर दिया। नगर के स्त्री, पुरुष, बच्चे उद्यान में एकत्रित हो गए। चण्डकौशिक को स्थिर, शान्तचित्त देखकर उनकी प्रसन्नता का कोई पारावार न रहा। कोई नागराज की पूजा-अर्चना करने लगा, कोई दूध पिलाने लगा, तो कोई खीर चढ़ाने लगा, इन सबसे बेखबर नागराज तो अपनी बाम्बी में मुँह डाले निष्क्रिय पड़े रहे। मीठी खीर के कारण अनेक चीटियां नागराज के शरीर पर चिपक गईं व काटने लगीं। नागराज का शरीर लहूलुहान हो गया। नागदेवता तो समभाव को प्राप्त कर चुके थे, वे देह से ऊपर उठ चुके थे, अत: वे शान्त व स्थिर हो पड़े रहे। वास्तव में वे अपना प्रायश्चित कर रहे थे, पश्चाताप की अग्नि में जल रहे थे, कर्मो को खपा रहे थे, अन्त में पश्चातापस्वरुप उन्होंने अनशन को धारण कर लिया। १५ दिन के अनशन के पश्चात् नागराज मृत्यु को प्राप्त हुए, तद्पश्चात् वे सहस्तार स्वर्ग में उत्पन्न हुए।

महावीर द्वारा दृष्टिविष सर्प के हृदय परिवर्तन की घटना की चर्चा चहुँओर होने लगी, यकीनन महावीर का अभय भाव, अहिंसा के प्रति दृढ़ निष्ठा, मैत्री व करुणाभाव इतना प्रबल व असरकारी था कि विषधर नागराज भी शान्त, समभावी बन गए व आत्मकल्याण-पथ पर अग्रसर हो मोक्षगामी बन गये।

- श्रीमती संतोष जैन

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for More Updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

दीक्षा - आत्मा का पुनर्जन्म

प्रत्येक कर्म परम्परा में किसी न किसी रुप में दीक्षा का प्रचलन है। दीक्षा देने वाला गुरु होता है और शिष्य-वैरागी होता है दीक्षा लेने वाला, अतएव शिष्य को दीक्षित कहा गया है। "दीक्षितं मौड्यम् शिष्यं च।" प्राचीन धर्म शास्त्रों में दीक्षित शिष्य को 'अन्तेवासी' शब्द से भी पुकारा जाता था। अर्थ स्पष्ट है, गुरु के निकट में निवास करने वाला। दीक्षित होने वाला कौन है? इस प्रश्न के उत्तर में जाकर, दीक्षित होने वाले का मावोलपाठ क्या है, चिन्तन-दिशा क्या है, अगर ये सब है तो वह दीक्षा का यथार्थ पात्र है। दीक्षा के चिन्तन पाठ में "अप्पाणं वोसिसीम" वाक्य का प्रयोग किया जाता है, इसका अर्थ है कि पहले के जाति आदि से सम्बन्धित जितने भी विकल्प थे, वे सब आज से विसर्जित कर दिए गए हैं, दीक्षा एक प्रकार से आत्मा का पुनर्जन्म है। गौतम जैसा महान ज्ञानी भी महावीर के आगे दीक्षित होता है और दूसरी ओर 'मा रुष मा तुष' जैसा एक साधारण छोटा सा वाक्य भी याद न करने वाला और उसे भूलकर 'मास्तुष' बना देने वाला, मूढ़ अज्ञानी शिष्य भी दीक्षित होता है। 'मा-रुष मा-तुष' का अर्थ है - प्रतिकूलता के होने पर भी रोष न करें, शिकायत न करें। अनुकूलता के होने पर भी संतोष - प्रसन्नता रखें और अहंभाव न करें। कितना सुंदर भाव है। चार अक्षरों में दीक्षा का सर्वस्व समा गया है किन्तु वह विचार क्या करे। 'मास्तुष' रहता है जिसका अर्थ है - उड़द पर का छिलका। आप हसेगें कि यह कैसा शिष्य और उस मूढ़

को दीक्षा देने वाला गुरु भी कैसा? परन्तु 'मास्तुष' अपने मन से शुद्ध भाव से रहने वाला भी अन्तत: केवल ज्ञान प्राप्त करता है। **शेष पृष्ठ २६ पर...**

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

स्व. श्री आनन्द कीमती
दिव्याशीष प्रदाता : समाज शिरोमणी
जैनरत्न स्व. श्री राजेन्द्रकुमारजी कीमती

विदुषी महिला रत्न, नारी गौरव श्रीमती पुष्पा राजेन्द्रकुमार कीमती, विनोद-सुधा, सोनाली आनन्द, विक्रम-प्रिया, अनुराग-साक्षी, अंकुर, स्पर्श, पुर्वा एवं समस्त कीमती परिवार

VINOD KIMTEE - 98490 11350 VIKRAM KIMTEE - 99494 88882

THE SYMBOL OF TRUST

GOKUL KRISHI UDYOG PVT LTD.
MUKTIYAR GUNJ, HYDERABAD
GOKUL GEMS & JEWELS P. LTD.
ABIDS, HYDERABAD
ANAND'S GOLD PVT LTD.
ABIDS, HYDERABAD
PRIMELINE ENTERPRISES PVT. LTD.
KOTI, HYDERABAD (CONSTRUCTION)
GOKUL FINANCIERS
BANJARA HILLS, HYDERABAD.

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार, महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

Harsh Jain
Mob: 9246500264
Rakesh Jain
Mob: 9032925000
Kushal Jain
Mob: 7207070260

SIMPLEX
Electricals
Home To Your Electric Needs

atomberg Groomiist TISVA
POLYCAB L&T HAVELLS Crabtree WARMEX Schindler Finolex wipro
FINECAB Goldmedal KARCHER orient VOLTAS USHA Racold
Crompton legrand OREVA PHILIPS Hunter LUKER orb energy V-GUARD

S.No.11, Beside Ramakrishna 35 MM NTR Estate,
Troop Bazar, Abids,Hyderabad, Telangana, Bharat- 500 001
Helpline Number : +91 7670801900
Ph: 040-24742143 /040-24610260
email: simplexelectricals1994@gmail.com

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation

Khanvel RESORT
SILVASSA

09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555

follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com

sales@khanvelresort.com

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Nemichand Jain
Mob:- 9920040069

Ravi Jain Mob:- 9322260446
Manish Jain Mob:- 9320140069

N. O. TEXTILES

INTERLINING CLOTH MERCHANTS & GREY COMMISSION AGENTS

GREY SUPPLY OF MULMUL & CAMBRIC

90, Cavel Cross Lane No. 2, Lalwani Mansion, 1st Floor,
Dady Seth Agiari Lane, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400002

Tel.:- 022-49738435 / 8369961530

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Samrat Jewellers SJ

नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें

अनोखीलाल नाहर जैन **पंकज नाहर जैन**

३१ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर (पश्चिम), मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९

दिगम्बर जैन श्वेताम्बर
अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Vijaychand Vaid (Phalodi)
Mob. : 9345196701

Priya Exports

40/25, Kannu Swamy Road, R.S. Puram,
Coimbatore, Tamil Nadu, Bharat- 641002

भारत को 'BHARAT' ही बोलें 'INDIA' नहीं

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

भंवरलाल पगारिया जैन
वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ २४ से... जैन धर्म शब्दों पर उतना नहीं, जितना की भाव पर स्थित है, प्राय: सभी धर्म भी भाव पर ही टिके हुए हैं, अगर मन में शुद्ध भाव नहीं है तो कुछ भी नहीं होने वाला-मिलने वाला, सिर्फ समय की बर्बादी है। दीक्षित से एक मात्र अपेक्षा है-अन्तर दीप बुझने न पाये साधना का। जैन-शासन रुढ़िवादी नहीं है, किसी एक शब्द-खूंटे से बंधा हुआ विचार, झूठ, पशु नहीं है, वह ग्राम तलैया की बजाय निरन्तर प्रवाहित रहने वाली पावन-गंगा है। अति से बचो, अमृत-शहद घी भी अति से घातक विष हो सकता है। विष भी उचित मात्रा में औषधि जीवन रस का दाता है। दीक्षा का अर्थ केवल कुछ बंधी-बंधायी व्रतावली को अपना लेना नहीं, तीर्थंकर महावीर कहते थे, यह सब तो बाहर की बाते हैं, वातावरण बनाये रखने के साधन हैं 'लोग लिंगस्य ओयणं' दीक्षा का मूल विषय तो है- परम तत्व की खोज। मैं चाहता हूँ, आज का साधु-साहसी समाज दीक्षा के मूल वैराग्य को स्पष्टता के साथ उपस्थित करे। मैं सुनता हूँ, साधुओं के उपदेश की घिसी-पिटी एक पुरानी सी परम्परागत प्रचलित भाषा। "संसार असार है, कोई किसी का नहीं है, सब स्वार्थ का माया जाल है, नरक में ले जाने वाले हैं, जीवन में सब और पाप ही पाप है, अत: छोड़ें यह सब प्रपंच, एक दिन तो यह सब छोड़ना ही है, फिर आज ही क्यों न छोड़ दो, सब ओर झूठ का पसारा है, परिवार से, समाज से, सबसे सम्बन्ध तोड़ो, वैराग्य ग्रहण करो, दीक्षा लो"।

यह तोता रटत भाषा है, जिसे कुछ भावुक मन सही समझ लेते हैं और आँखें मूंद कर गुरु के पास वैरागी बनकर रहने लगते हैं, जब तक दीक्षा पक्की नहीं हो जाती, तब तलक वैरागी को बड़े प्यार, लाड, दुलार से रखा जाता है, खिलाया जाता है अच्छे-अच्छे घरों में, घुमाया जाता है, बड़ी-बड़ी गाड़ियों में, ताकि वैरागी को अपने घर की याद न आये और वो किसी न किसी तरह दीक्षा लेकर साधु-साध्वी बन जाये, गुरु की बातों में आकर साधु-साध्वी बन जाते हैं परन्तु वस्तुत: होता क्या है दीक्षित होने के बाद। पंथ-परम्पराओं और सम्प्रदायों के नए-परिवार खड़े हो जाते हैं, राग-द्वेष के नये बन्धन आ धमकते हैं, अपने घर में सुख-चैन से रह रहा वैरागी मजबूत खूटे से बांध दिया जाता है। क्या राहत मिलती है खूंटा बदलने से, कुछ दूर चल कर बहुत शीघ्र ही वह अनुभव करने लगता है कि जिस समस्या के समाधान के लिए मैं यहाँ आया था, वही समस्या यहाँ पर भी है। वही स्वार्थ, वही दंश, वही अधंकार, वही घृणा और है वही द्वेष। कुछ भी तो अन्तर नहीं है, कहाँ आन फंसा मैं यहाँ, परिणाम स्वरुप अनेक दीक्षितों से कभी-कभी सुनने को मिलता है कि क्या करें? साधना तो हो रही है, पर वह सब ऊपर-ऊपर से हो रही है, भीतर में कोई परिवर्तन नहीं, कोई नई उपलब्धि नहीं, इस प्रकार एक दिन वह प्रसन्न चित्त वैरागी अपने में एक गहरी विभक्ति अनुभव करने लगता है। आज की साधु-संस्था के समक्ष यह एक ज्वलंत समस्या है, इसलिए साल-दो साल बाद सभी साधुओं-साध्वियों का एक महासम्मेलन आचार्य श्री, युवा आचार्य श्री के नेतृत्व में होते रहना चाहिए ताकि जो साधु-साध्वी अपने साधक जीवन में खुश नहीं है, अपनी बात को सबके सामने रख सके। परिवार, समाज में से बाहर निकल कर दीक्षा लेने का अर्थ परिवार तथा समाज से घृणा नहीं है, खिन्नता नहीं है, अपितु वह तो आत्म सेवा है। परमात्म-तत्व को खोजना और पा लेना ही साधना का मुख्य लक्ष्य है। दीक्षार्थी अपने अन्दर शुद्धत्व के लिए और बाहर समाज के शुभत्व के लिए प्रयत्नशील होता है।

(फार्म नं.- 4 नियम 8)

अखबारों के पंजीकरण केंद्रीय नियम 1956 के नियम के तहत
'जिनागम' मुंबई के स्वामित्व और अन्य विवरण के बारे में घोषणा।

1) प्रकाशन का स्थान : गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी- 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059

2) प्रकाशन की अवधि : मासिक

3) मुद्रक का नाम : विनय ग्राफिक्स, कोंडिविटा

क्या भारतीय नागरिक हैं? : हाँ

4) सम्पादक का नाम : बिजय कुमार जैन

क्या भारतीय नागरिक है? : हाँ

पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059

5) इस समाचार पत्र के स्वामी व सहभागी जिनका सहभाग एक प्रतिशत से ज्यादा हो उनका नाम व पता

1) बिजय कुमार जैन
पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट,
मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059

2) श्रीमती संतोष जैन
पता : बी - 217, हिन्द सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत - 400 059

मैं बिजय कुमार जैन, गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि. के लिए घोषणा करता हूँ कि मेरी जानकारी और विश्वास के मुताबिक ऊपर लिखित विवरण सही है।

बिजय कुमार जैन
प्रकाशक के हस्ताक्षर
तारीख 9 मार्च 2025

जीयो और जीने दो के विचारक तीर्थंकर महावीर के
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

आचार्य भिक्षुजी | आचार्य तुलसीजी | आचार्य महाप्रज्ञजी | आचार्य महाश्रमणजी

Dalpat Lodha
Mob. : 93145 14085

LODHA IMPEX
JAIPUR-MUMBAI

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Manufacturers & Exporters of
READYMADE GARMENTS

SPL-E-100, Garments Zone, RIICO, E.PI.P, Sitapura Indl. Area,
Tonk Road, Jaipur, Rajasthan, Bharat - 302022
Tel.: 91-141-2770465-466-467-468 | Fax : 91-141-2770462
email : jaipur@thelodhagroup.com / lodhaimpexsatyam.net.in
Visit us at : www.thelodhagroup.com

श्वेताम्बर जैन दिगम्बर
जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

Dulichand Bokaria
Mob: 9435409629 / 9101901895 / 9435195585

OSWAL BROTHERS

Deals In: All Types of Household Kitchenware
Crockery & Home Appliances

14-A, Suraj Market, H.B. Road, Fancy Bazar,
Guwahati, Assam, Bharat-781001
अणुडाक: oswalbros14@gmail.com

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

श्रीमान पदमचन्दजी श्रीमती शान्तिदेवी पाटनी
संजयकुमार-शालिनी, सुमित-रितिका, (पुत्र एव्म् पुत्रवध)
रजत-सिमरन (पोत्र एव्म् पोत्रवधु), प्रतिक्षा, दिशा, नव्या (पोत्री)
प्रतिभा-श्रवण सेठी, पूनम-निरेन पाण्ड्य(पुत्री एव्म् जवाई)
तनिष, वीर, संचय (दोयता) याशी (दोयती)
एवं समस्त पाटनी परिवार
सिद्धर्थ रेजीडेन्सी, छत्रीबाड़ी, पल्टन बाजार, गुवाहाटी, आसाम, भारत

पदमचंद पाटनी जैन

सेठी सदन, मेघदूत सिनेमा के पास, तीसरा माला, पलटन बाजार, गुवाहाटी, आसाम, भारत-७८१००१
दूरध्वनि :०३६१-२५१७९५७ भ्रमणध्वनि : ०९४३५५५११११, ९८६२००९६११

सोहनी मोटर्स

(ए एम डी ऑफ टीवीएस मोटर को. लि. पुजा एन्क्लेव, धारापूर, चराईली, गुवाहाटी, आसाम, भारत-७८१०१७

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

श्री रसिकलाल एम. धारीवाल का जन्मदिन रक्तदान शिविर के साथ मनाया गया

पुणे: आरएमडी फाउंडेशन के संस्थापक अध्यक्ष एवं माणिकचंद ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज के चेयरमैन रसिकलाल एम. धारीवाल का जन्मदिन लगातार पिछले ८ वर्षों से रक्तदान शिविर के साथ मनाया जा रहा है, इस वर्ष उनके जन्मदिन पर आयोजित रक्तदान शिविर में २०० से अधिक रक्तदाताओं ने अपना अमूल्य रक्तदान किया, इस कार्यक्रम में प्रसिद्ध गायक हरिहरन सुब्रमणि उपस्थित थे और उन्होंने शुभकामनाएं दीं। श्री रसिकलाल धारीवाल के जन्मदिवस के अवसर पर फाउंडेशन के माध्यम से एच.वी. देसाई नेत्र चिकित्सालय में '१०० लोगों का निःशुल्क मोतियाबिंद सर्जरी' किया गया। फाउंडेशन के अध्यक्ष शोभाताई ने 'जिनागम' को बताया कि अब से आरएमडी फाउंडेशन के माध्यम से हर माह १०० मोतियाबिंद ऑपरेशन निःशुल्क किए जाएंगे।

माढा वेलफेयर फाउंडेशन संगठन के पदाधिकारियों ने बताया कि 'जिनागम' को सोलापुर के 'नीमगांव' में स्थापित किए जा रहे सौ. शोभाताई धारीवाल मुक्तांगन शेतकरी प्रशिक्षण केंद्र' के माध्यम से पूरे वर्ष कृषि और गैर-कृषि पर आधारित विभिन्न प्रशिक्षण आयोजित किए जाएंगे, इस बार उनके साथ आए २५ सदस्यों ने रक्तदान किया, इस अवसर पर कर्नाटक के कुडची बेलगाम में आरएमडी. फाउंडेशन के माध्यम से स्थापित सौ. शोभाताई इंग्लिश सेकेंडरी स्कूल' के पदाधिकारियों, शिक्षकों और प्राचार्य ने शोभाताई को धन्यवाद दिया और उनका अभिनंदन किया, इस अवसर पर २० स्कूल कर्मचारियों ने रक्तदान किया।

जान्हवी धारीवाल बालन ने 'जिनागम' को बताया कि फाउंडेशन ने पुणे रिंग रोड परियोजना में काटे जा रहे सैकड़ों पेड़ों को 'ट्री ट्रांसप्लांटेशन' के माध्यम से बचाने का काम शुरू किया है और समाज के सभी लोगों से इस पहल में सहयोग करने और पेड़ों को बचाने की अपील की है। वृद्धेश्वर सिद्धेश्वर के प्राचीन मंदिर के जीर्णोद्धार में उनके कार्य के लिए शोभाताई को मंदिर की ओर से धन्यवाद दिया गया और उनका अभिनंदन किया गया। सुबह आठ बजे शुरू हुआ रक्तदान शिविर शाम सात बजे तक चला।

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES

FEATURES :
- Automatic start, stop and clear.
- With Batch, Add and Self-checking functions.
- UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
- Automatic half-note, chained note detecting.
- Double-note detecting with IR.
- LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
- Counting Display : 4 digits
- Batch Display : 3 digits
- Counting speed : 1000pcs/min
- Hopper Capacity : 300 notes
- Stacker Capacity : 200 notes
- Size of countable note : 50*110-90*190mm
- Power Supply : AC220V±10% 50Hz
- Power Consumption : ≤ 80W
- Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO® An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada,Navimumbai-400705, INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

विश्व शांति का संदेश जियो और जीने दो
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

इंजी. कैलाश चन्द्र जैन

महासचिव- बुन्देलखण्ड सांस्कृतिक एवं सामाजिक सहयोग परिषद, लखनऊ
प्रांतीय प्रकल्प संयोजक-भारत विकास परिषद,
अवध प्रान्त, उत्तर मध्य क्षेत्र - २
कार्यकारिणी सदस्य- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, इंदिरा नगर, लखनऊ
सदस्य- भारतीय जैन मिलन (साकेत) लखनऊ
भ्रमणध्वनी - ९४१५४७०१४६
निवास: ९/३३६, इन्दिरा नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत -२२६०१६

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार
महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Tarun Motta
Mob : 9820298205

TEEARCH
Architects Engineers Consultants
9 Square, Ramdas Sutrale Marg, Off Chadavarkar Lane,
Borivli West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400 092,
Ph: 022-28928888
Email: tarunmotta@teearch.in/ teearch.teearch@gmail.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार, महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

Babulal Shrishrimaal (Ghoda)
Mob: 98202 86158
S.B. Oswal
45 Dhanji Street, 4 Floor,
Room No 31, A Shilver Menson,
Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400003
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आचार्य श्री का नाम मात्र लेने से भावुकता से भर आता है मन

मुंबई: संत शिरोमणि आचार्य विद्यासागर महाराज की प्रथम समाधि दिवस पर महाविरायतन फाउंडेशन की तरफ से मुंबई के दादर में स्मरणांजलि समारोह आयोजित किया गया, मुंबई और उपनगर सहित जैन समाज के देशभर से कई दिग्गजों ने श्रद्धा सुमन अर्पित किए, समारोह में राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागडे, जैन प्रभावक देवेंद्र ब्रह्मचारी, बाल ब्रह्मचारी अशोक भैया, सीए केसी जैन, पूर्व केंद्रीय मंत्री प्रदीप जैन, तरुण जैन, पद्मश्री मनोज जोशी सहित बड़ी संख्या में जैन समाज के लोग उपस्थित थे। राजस्थान के राज्यपाल हरिकृष्ण बागड़े ने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए कहा कि आचार्य विद्यासागर जी महाराज का जीवन सत्य, अहिंसा और आत्मज्ञान की दिशा में अडिग था, उन्होंने अपने त्याग, तपस्या और सेवा से पूरे समाज को एक नई दिशा दी, आचार्य विद्यासागर जी महाराज का जीवन भारतीय संस्कृति की असली पहचान है, उन्होंने समाज को नैतिकता और अहिंसा का जो मार्ग दिखाया, वह युगों-युगों तक प्रेरणा देता रहेगा, उनका योगदान संपूर्ण भारतीय समाज के लिए अनुपम है, उनकी दी हुई शिक्षाएं समाज में शांति, अहिंसा और समर्पण के मूल्य सिखाती है, उन्होंने आयोजन को लेकर देवेन्द्र ब्रह्मचारी की सराहना करते हुए कहा कि आज के युग में ऐसे गुरुभक्त कम ही मिला करते हैं, जो अपना सब कुछ त्याग कर देश और समाज के लिए आगे आते हैं।

देवेंद्र ब्रह्मचारी ने कहा कि योग और जैन साधना में गहरी समानता है

और आचार्यश्री ने अपने जीवन में जो सिद्धांत अपनाए, वे सभी के लिए प्रेरणादायक हैं। आचार्य श्री को याद कर भावुक होते हुए उन्होंने कहा कि गुरु का नाम मात्र लेने से मन भावुकता से भर आता है। आचार्य श्री ने अपने जीवन को साधना और समाज सेवा के लिए समर्पित किया। गुरुदेव इस संसार से सदा के लिए विदा हो गए, लेकिन उनका जीवन, उनकी शिक्षा और उनके द्वारा दिखाए गए मार्ग की रोशनी आज भी हमारे दिलों में जीवित है। संत शिरोमणी गुरु विद्या सागर महाराज जी के महान ग्रंथ 'मूकमाटी' और 'भारत गौरव' पुस्तक का विमोचन भी किया गया।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

श्री माधव सेवा संघ एवं समस्त गौ सेवकों द्वारा नंदा नंदी गौशाला नेरलूर में 'एक शाम गौ माता के नाम' विशाल भजन संध्या का आयोजन किया गया। बड़ी संख्या में राजस्थानी युवाओं ने गैर नृत्य की प्रस्तुति दी, कार्यक्रम में भजन कलाकार ओम मुंडेल एवं अनिता जांगिड़ ने भजनों की प्रस्तुति दी। बाल कलाकार कल्पना पटेल ने मनभावन नृत्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम में गो भक्तों ने बढ़ चढ़कर गौ सेवा के लिए दान राशि की घोषणा की। कृष्ण गौशाला आश्रम एवं विभिन्न गौशालाओं के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे। मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने गो भक्तों को गौ सेवा के लिए प्रेरित किया। शिव गौ सेवा मंडल चैरिटेबल ट्रस्ट, व्हाट्स फाउंडेशन एवं अन्य संगठनों ने कार्यक्रम को सफल बनाने में भूमिका निभाई। आयोजकों ने अतिथियों एवं दानदाताओं को सम्मानित किया। मोहन सीरवी ने कार्यक्रम का संचालन किया।

नित्य नृत्य डांस स्कूल द्वारा हंपी नगर स्थित चंद्रशेखर आजाद खेल मैदान में आयोजित वार्षिकोत्सव बीट्स २०२५ कार्यक्रम में बाल प्रतिभाओं को पुरस्कृत करते हुए मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत।

बसवेश्वरा नगर बॉयज द्वारा अंबेडकर खेल मैदान बसवेश्वरा नगर में आयोजित टेनिस बॉल स्पर्धा टाइगर कप २०२५ कार्यक्रम में खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए विशिष्ट अतिथि युवा समाज सेवी विद्यार्थी मित्र महेन्द्र मुणोत।

राधा सुरभि गो मंदिर राष्ट्रीय गौ सेवा संस्थान ट्रस्ट द्वारा राज्य में जन-जन को गौ सेवा के लिए प्रेरित करने एवं गौ रक्षा के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से गौ सेवा गतिविधि कर्नाटक नंदी रथ यात्रा का कार्यक्रम पिछले ६० दिनों से चल रहा है। शनिवार को शांति नगर मैदान में आयोजित समारोह में जन समूह को गो सेवा के लिए प्रेरित करते हुए समारोह अध्यक्ष महेंद्र मुणोत।

बेंगलुरु सिटी पुलिस फ्रेंड्स द्वारा जेपी पार्क खेल मैदान में आयोजित क्रिकेट स्पर्धा बीसीपी फ्रैंड्स कप २०२५ कार्यक्रम में मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी विद्यार्थी मित्र महेन्द्र मुणोत ने खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन करते हुए कहा, 'स्वस्थ रहने के लिए खेलकूद एवं व्यायाम अति आवश्यक है' आयोजकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

लक्ष्मी रंगनाथ शिक्षण संस्थान द्वारा हंपी नगर स्थित बृहद बेंगलुरु महानगरपालिका खेल मैदान में वार्षिक उत्सव चिगुरु हब्बा का आयोजन किया गया, कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं, जिससे अभिभावक भाव-विभोर हो गए। मुख्य अतिथि युवा समाज सेवी विद्यार्थी मित्र महेन्द्र मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा, 'बच्चे राष्ट्र के भविष्य हैं, उन्हें अच्छे संस्कारों से पोषित करें।' संस्थान प्रबंधन ने श्री मुणोत को सम्मानित किया। ये सभी उक्त जानकारियां भूपेन्द्र एस. भानावत ने 'जिनागम' पत्रिका का प्रेस विज्ञप्ति द्वारा भेजी है।

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर हार्दिक शुभकामनाएं

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

ASIAN EYE HOSPITAL
AND LASER INSTITUTE
Where every eye smiles
ससुन रोड, पुणे

Man Kanhaiya Eye Bank
Donate Vision

डॉ. कांकरियांचे
साई सूर्य नेत्रसेवा
दृष्टी साजरी करा
वर्धमान, **माणिकचौक**, अहमदनगर

HELPLINE : 8888 98 2222 / 911 2288 611
0241-2346317 / 2341417 / 2346017

saisuryaa85@yahoo.com
www.saisuryasupervision.com

Nirmal

रूग्णांनी येतांना जुने रिपोर्टस् बरोबर घेवून यावीत.

May Lord Mahavir Bless You Abundantly &
May Your Life Be Filled With Peace,
Good Health, Prosperity & Compassion.

With Best Compliments

Nimesh N. Kampani

Address:- 141 - Maker Chamber-III, 13th Floor,
Nariman Point, Mumbai,
Maharashtra, Bharat - 400021

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

Introducing Precision Laser Cutting of ...
Pipes, Tubes & Channels

CNC Laser Tubes & Pipes | CNC Laser Metal Sheet | Precision Laser Welding

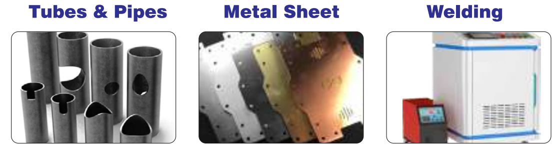

CNC Tubes & Pipes Bending | CNC Power Press Brakes | CNC Lathes & Machining Shop

VINIDIUM LASER

For Technical & Sales Queries:
9322883370
9867977922
vinidiumlaser@gmail.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!
जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!
जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

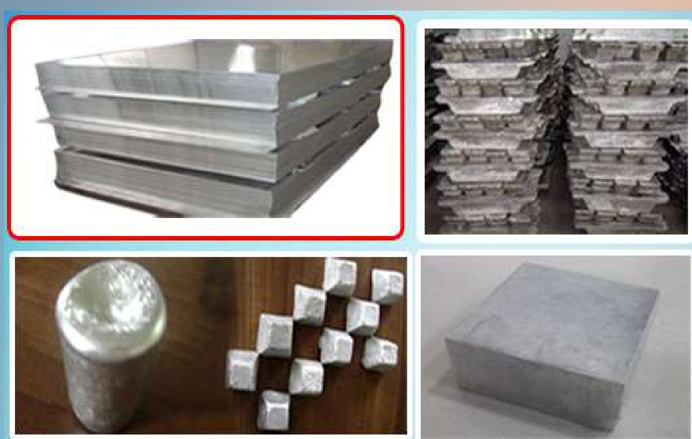

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road,
Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

सेवा, सरलता, सामंजस्य की भावना से धर्म साधक बनना संभव -आचार्यश्री विमलसागरसूरी

भद्रावती: श्री पार्श्वनाथ जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक संघ के पार्श्व भवन भद्रावती में धर्मसभा को संबोधित करते हुए जैनाचार्य विमलसागरसूरीश्वजी ने कहा कि आधुनिक समाज को अधर्म और विज्ञान पर बहुत विश्वास है, धर्म पर गहरी श्रद्धा नहीं है। धर्म के नाम पर होते विवाद भी अधर्म का ही रूप है, धर्म तो विवाद नहीं संवाद सिखाता है, मारना नहीं बचाना सिखाता है, धर्म द्वेष और वैमनस्य नहीं, प्रेम व सद्भावना की शिक्षा देता है, धर्म मात्र उपदेश नहीं, आत्म विश्लेषण और संवेदना का विषय है, बुद्धि से धर्म नहीं होता, श्रद्धा-भक्ति से ही धर्म हो सकता है। शक्ति, संपत्ति या सत्ता से हम धार्मिक नहीं हो सकते, बल्कि सेवा, सरलता, सामंजस्य, सहअस्तित्व की भावना से धर्म साधक बन सकते हैं।

आचार्य विमलसागरसूरीश्वरजी ने कहा कि धर्मतत्व पृथ्वी पर मानवजाति को मिला हुआ अमूल्य वरदान है, इसे संप्रदायों की संकीर्ण व्यवस्थाओं से ऊपर उठकर प्राणिमात्र के कल्याण के रूप में देखा जाना चाहिये। संप्रदायों के स्वरूप, उनकी व्यवस्थाएं, मान्यताएं और नीति-रीति भिन्न-भिन्न हो सकती हैं, लेकिन धर्मतत्व का स्वरूप तो सदैव एक जैसा निर्मल सर्वकल्याणकारी ही होता है, एक बार धर्मतत्व की विस्तृत व्याख्या को समझने का प्रयास करना चाहिए, जो पतन के मार्ग से हमें बचाए और प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ाए, उसे ही शास्त्रों ने धर्म कहा है, जो सदाचार, संयमित जीवन, दया, दान, साधना, मैत्रीभावना, अहिंसा, करुणा, नैतिकता आदि की शिक्षा-दीक्षा दें, उसे धर्म कहा गया है, जो किसी का बुरा न करे और सबकी भलाई की कामना करे, वह धर्म है, मानों कि धर्मतत्व है तो पृथ्वी टिकी है, धर्म के बिना जीवन व्यर्थ है। दुनिया की कोई भी उपलब्धि धर्मतत्व की बराबरी नहीं कर सकती, इसलिए धर्म की रक्षा ही स्वयं की रक्षा है, जो धर्म की रक्षा करता है, प्रकारांतर वह अपनी ही रक्षा कर रहा है, इससे पूर्व हल्लीकेरे से पदयात्रा करते हुए आचार्य विमलसागरसूरीश्वरजी, गणि पद्मविमलसागरजी आदि सात श्रमणजन गांधी सर्कल पहुंचे, जहां कलश, श्रीफल और स्वस्तिक से समाज के श्रद्धालुओं ने उनका भव्य स्वागत किया, फिर पार्श्वनाथ जिनालय में सामूहिक चैत्यवंदना हुई। संघ के अध्यक्ष रतनचंद जैन और दिनेश जैन ने 'जिनागम' को बताया कि शनिवार को विविध मंत्रों, मुद्राओं और जड़ी बूटियों से एक सौ आठ पार्श्वनाथ का संगीतमय विशिष्ट अनुष्ठान हुआ, प्रभु पार्श्वनाथ के एक सौ आठ प्राचीन तीर्थों के इतिहास की रोचक प्रस्तुति हुयी, रात्रिकालीन ज्ञानसत्र में गणि पद्मविमलसागरजी तत्वों की विवेचना की।

Indulge your taste buds in nature's finest bounty with our exquisite mangoes !

1. Premium Quality - Devgad handpicked.
2. Irresistible Taste.
3. Variety - Alphonso & Paayri from Devgad, Kesar from Kachchh.
4. Freshness Guaranteed.

Do not miss out on the opportunity to savour the finest mangoes nature has to offer. Place your order today!

CONTACT :
SATISH MEHTA - 9892247125

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

उत्तम आर. जैन
अध्यक्ष - राष्ट्रवादी कॉंग्रेस पार्टी सेवादल मुंबई प्रदेश
मो : 9699887999

संपर्क कार्यालय : 30/36, 1-ए, जयहिंद इस्टेट, रुम नं. 3-ए,
2 रा मजला, भुलेश्वर, कालबादेवी, मुंबई - 400 002.
E-mail: uttamjain113@gmail.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

गणिनी आर्यिका सुयोग्य नंदिनी माताजी का द्वितीय गणिनी पद दिवस मनाया गया

औरंगाबाद, मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल: परम पूज्य गुरुमाँ गणिनी आर्यिका श्री १०५ सौम्यनंदिनी माताजी की प्रथम शिष्या परम पूज्य गणिनी आर्यिका श्री १०५ सुयोग्यनंदिनी माताजी के आर्यिका पद के सर्वोच्च पद गणिनी पद प्राप्ति के प्रथम वर्ष पूर्ति अवसर पर धर्म सभा का भव्य आयोजन औरंगाबाद, मुर्शिदाबाद, पश्चिम बंगाल में किया गया, ज्ञात हो कि पूज्य माताजी को ता २२ फरवरी २०२४ को २७ वर्ष से कम अल्प आयु में ही गणिनी पद श्री सम्मेद शिखर में पूज्य गुरुमाँ गणिनी आर्यिका सौम्यनंदिनी माताजी द्वारा प्राप्त हुआ था, पाद प्रक्षालन, शास्त्र भेंट आदी के पश्चात गणिनी आर्यिका सुयोग्य नंदिनी माताजी के बाल्य जीवन पर आधारित छोटे-छोटे बच्चे द्वारा एक नाटक मंचन हुआ, औरंगाबाद की बेटी सिद्धी जैन द्वारा अंकित माताजी के चित्र का विमोचन हुआ, विभिन्न वक्ता द्वारा पूज्य माताजी का गुणगान हुआ, धर्म सभा में मुर्शिदाबाद जिला के सभी गाँव के श्रावक तथा भागलपुर आदी नगर के श्रावक उपस्थित थे, सभा के अंत में पूज्य माताजी संघ का प्रवचन हुआ। २३ फरवरी को माताजी संघ का विहार धर्म प्रभावना हेतू मुर्शिदाबाद जिला के मिर्जापुर (गनकर) की ओर हुआ। ज्ञात हो कि मुर्शिदाबाद जिला के सब गांव एकसूत्र से जुड़े हुए हैं, जहां रात्रि विवाह तथा मृतक भोज व भेंट सम्पूर्ण रूप से वर्जित है।

-संजय कुमार जैन बड़जात्या
धुलियान, पश्चिम बंगाल, भारत

मुनि परंपरा जैन संस्कृति को अक्षुण्य रखता है

चिकलठाणा: भारतीय संस्कृति में दस हजार वर्षों के अधिक समय से जैन संस्कृति एवं सभ्यता का एक विशेष स्थान रहा है। लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व २४ वें तीर्थंकर महावीर स्वामी इस धरती पर अवतरित हुए, तीर्थंकर महावीर स्वामी के पहले ढाई सौ वर्ष पूर्व २३ वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ स्वामी ने तत्कालीन समाज को सत्य, शांति, अहिंसा, सदाचार का उपदेश दिया, तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी के पहले २२ तीर्थंकर हुए, ऋषभदेव उर्फ आदिनाथ प्रथम तीर्थंकर हुए, जिनके समय काल का निश्चित अनुमान उपलब्ध नहीं है। तीर्थंकर आदिनाथ के दो पुत्र भरत और बाहुबली सर्वविदित है, भरत जी के नाम से इस देश का नाम 'भारत' हुआ, इतनी प्राचीन संस्कृति और सभ्यता इस देश की है। मुनि परंपरा खंडित हो गई थी, प्राचीन 'आर्यावर्त' में ब्रह्मदेश, नेपाल, अफगानिस्तान, पाकिस्तान आदि स्थान पर जैन मुनि विचरण करते थे और जैन संस्कृति का प्रभाव था। कालचक्र गति से मुनि परंपरा खंडित हो गई थी, २० वीं शताब्दी में इस धरती पर एक प्रखर बुद्धिमान संस्कृति उद्धारक बालक ने जन्म लिया और खंडित मुनि परंपरा को पुनर्जीवित करने का कार्य किया, वह बालक था प्रथमाचार्य शांतिसागर जी महाराज! एक समय था जब 'भारत' की आबादी में ४० करोड़ जैन समाज था, सिकुड़ कर बादशाह अकबर के समय ४ करोड़ रह गया और आज लगभग एक करोड़ के आसपास है, क्या यह चिंता का विषय नहीं है।

जैन समाज, जैन संस्कृति एवं जैन धर्म के लिए यह गंभीर समस्या है, जैन जनसंख्या घटती गई तो जैन तीर्थ, संस्कृति, मंदिर की सुरक्षा कौन करेगा? आज तीर्थ क्षेत्र व मंदिर निर्माण करना आवश्यक नहीं है, जैन समाज की जनसंख्या वृद्धिगत होना समय की मांग है। सभी मुनियों, साधुओं, आर्यिकाओं से मेरा अनुरोध है कि जैन जनसंख्या महत्वपूर्ण समस्या है, समय रहते समाज को सजग करें, हमारी संस्कृति मुनि आर्यिकाओं से है, तीर्थ क्षेत्र मंदिर सुरक्षित रखना है तो भविष्य में जैन आबादी ५-६ करोड़ होना आवश्यक है। - **एम.सी. जैन, पत्रकार**
चिकलठाणा
मो. ९४२३१५०११६

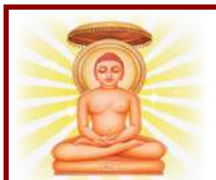

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Vinod Jain
Mob:- 9766045328

VINAY TRADERS
Wholesale & Retail
All types Of Disposable & General Items

Gala No. 01, Shriji Kripa Building 305, Opp Dr. Ajay Dikshit,
Nazrana Compound, Bhiwandi, Dist. Thane Maharashtra, Bharat - 421302

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर हार्दिक शुभकामनाएं
परस्परोपग्रहो जीवानाम
हटाओ रासायनीक शैम्पू एवं साबुन,
अपनाओ आयुर्वेदिक पाउडर सिल्केशाईन।
वनौषधीयों से निर्मित
सिल्केशाईन
आयुर्वेदिक शिकेकाईयुक्त पावडर
सिल्केशाईन में है बहुगुणी जडी-बूटीयाँ, इसलिये यह बालों में रूसी एवं जुएँ होने से रोकता हैं एवं बालों को झडनेसे बचाता हैं। साथ ही साथ बालों की जडें भी मजबूत करता हैं। इसका अद्वितीय रूसी नियंत्रण फार्मूला बालों को अधिक सुंदर, मुलायम, चमकीला स्वस्थ और जवाँ बना देता हैं।
सिल्केशाईन की जड़ी-बूटीयों से बालों की वृध्दि तो होती ही हैं साथमे इसका असरदार फार्मूला बालों को समयपूर्व सफेद होने से रोकता हैं। सिरकी त्वचा एवं बालों के रोगों से भी यह बचाव करता हैं। सिल्केशाईन में हानिकारक पदार्थ नही होने से यह बच्चों के लिये भी सुरक्षित हैं। इसकी जडी-बूटीयों की भीनी भीनी खुशबू दिनभर आपको तरोंताजा रखती हैं।
आयुर्वेदिक मेडिसीन
Silkeshine
Ayurvedic Powder With Shikekai
सिल्केशाईन
आयुर्वेदिक शिकेकाईयुक्त पावडर
JAI-SON HERBALS
जयसन हर्बल्स प्रा. लि.
नाशिक
स्वस्थ और सुंदर
बालों के लिये कुदरती नुक्सा
एक संपूर्ण स्वदेशी उत्पादन
Atelier-NSK-2596364
व्यावसायिक संपर्क: जिनेंद्र सेल्स कॉर्पोरेशन 202-ए, मेघदूत शॉपींग सेंटर, सी.बी.एस. के सामने, नाशिक-422 001. फोन-0253-2577777

मैं भारत हूं फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

सिद्धार्थ मुनि का ३३ वां दीक्षा समारोह का आयोजन

मुंबई: जैन संस्कार मंच मुंबई और चैतन्यपुरी हैदराबाद संघ के संयुक्त संयोजन में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। जैन संस्कार मंच के प्रणेता उप-प्रवर्तक सिद्धार्थ मुनि महाराज के ३३वें दीक्षा दिवस पर धर्म आराधना, सामायिक और पैसठिया छंद जाप के साथ अन्य अनुष्ठान का आयोजन चैतन्यपुरी हैदराबाद संघ में किया गया। श्रमण संघीय गुरुदेव ज्ञान मुनि महाराज, लोकेश मुनि महाराज, साध्वी महासती घमीसना महाराज आदि ठाणा-३ के सानिध्य में दीक्षा दिवस की शुरुआत महिला मंडल की कविता कोठारी और मंडली की प्रस्तुति से हुई। दीक्षा दिवस पर उपस्थित मुनियों और साध्वियों ने गुरुदेव सिद्धार्थ मुनि के संयम दिवस पर अपने विचार व्यक्त किए। सिद्धार्थ मुनि जी ने कहा कि मैं कुछ भी नहीं हूं, यह तो सब गुरुदेव की कृपा है, मुझे किसी ने सिखाया है तो वह सब गुरु रमेश मुनि महाराज हैं।

इनकी रही उपस्थिति: इस अवसर पर मंगल चंद खारीवाल, जितेंद्र कोठारी, राखी कांकरिया, मधु गुणावत, संजय सिंघवी, विनोद टीमसी, गुलाब डागलिया, किशोर मुथा, कुलदीप जैन, जीतू भाई, संगीता नाबेडा, हस्तीमल लोढ़ा, भरत नाहर, महावीर लालवानी, कमलेश नाहर, दीपक वाघमारे, संतोष कोठारी, दिलीप गादिया, प्रणव गांधी आदि उपस्थित थे।

राष्ट्रीय स्तर पर मुनि, आर्यिका, त्यागी सुरक्षा महाकमेटी का निर्माण हो

चिकलठाणा: हाल ही में आचार्य सुनीलसागर जी महाराज की परम शिष्या आर्यिका श्रुतमति माताजी गुजरात दाहोद के पास एक कार के टक्कर मारने से जगह पर ही आकस्मिक समाधि मरण हुआ, इस तरह राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश, बिहार, असम में कई हादसे हुए हैं, कई स्थानों पर जैन मुनि तथा साध्वियों को जानबूझ कर भी कुचले जाने के समाचार मिलते हैं, सत्य, शांति, अहिंसा के प्रतीक जैन मुनि तथा आर्यिकाएं होती हैं, किंतु इस तरह का दुर्भाग्यपूर्ण, ज्ञान विरोधी मूर्ख लोग द्वारा हीनता का आचरण अत्यंत दुखद है, जैन समाज को जागृत होना होगा। जैन अहिंसा व सिद्धांत का पालन परिपूर्णता से करना होगा, हमें कोई आंख दिखाने का प्रयास करे, तो आंख को आंख दिखाने की हिम्मत करनी होगी, अहिंसा का मतलब कदापि कमजोर नहीं, अहिंसा वीरों का धर्म है, अहिंसा और शांति में क्रांति है।

जैन मुनि, साधु, आर्यिकाएं सदैव विचरण करते हैं, एक स्थान पर कभी नहीं रुकते। प्रथमाचार्य शांतिसागर जी महाराज 'संभाग' से निकले थे तो स्वयं निजाम सरकार और बेगम दर्शन को पधारे। नग्न रूप, पांव में कुछ नहीं, केवल पिछी और कमंडल देखकर दंग रह गए और त्याग और तपस्या का बखान करने लगे। समुचे भारत में दिगम्बर जैन मुनि हजारों वर्षों से विहार कर रहे हैं, अनेक स्थानों पर जहाँ जैन परिवार कम हैं वहाँ जैन समाज यदि मिलकर नहीं रहता तो वहां 'जोरहाट' असम जैसी समस्या का निर्माण हो सकता है। उत्तर पूर्वी राज्यों व कई राज्यों जैन परंपरा से अनभिज्ञ होने के कारण भ्रम की स्थिति निर्माण होती है। असम राज्य में जैन धर्म का प्रचार प्रसार आवश्यक है, समाचार पत्रों में नियमित लेख व विज्ञापन प्रसिद्ध करना चाहिए। दिगम्बर जैन महासभा को विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। आचार्य श्री दयासागर जी महाराज डिब्रूगढ़ असम से सिलापथार की ओर जा रहे थे, तब उन्हें रुकावट आई, आचार्य प्रसन्नसागर जी महाराज को २००६ में 'सिलचर' कछार में ऐसी ही स्थिति निर्माण हो गई, रात्रि में ही पलायन करना पड़ा। मेरा समस्त जैन समाज व जैन मुनि, साधु, आर्यिकाएं एवं भारतवर्षिय दिगम्बर महासभा से अनुरोध है कि राष्ट्रीय स्तर पर १५१ सदस्यों की कमेटी का निर्माण कर, राष्ट्रीय सुरक्षा समिति की घोषणा करें। भारत में २९ राज्य और ८ केंद्र शासित प्रदेश हैं, कुल ३७ राज्य हैं, प्रत्येक राज्य में चार अनुभवी कुशल सदस्य नियुक्त करें, कदम उठाना समय की मांग है, केवल पद पर आसीन होने से समस्याओं का समाधान नहीं होगा, आशा है प्रस्तुत निवेदन पर गंभीर विचार किया जाएगा।

- एम.सी. जैन, पत्रकार

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

SANAT BADJATYA JAIN
Mob. : 098260 75364
17/3, Old Palsia, Raj Kalyan, Indore,
Madhya Pradesh, Bharat - 452001

भारत को 'भारत' ही बोला जाए   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें
Remove INDIA Name From The Constitution

जय गुरू नाना जय महावीर जय गुरू राम

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर हार्दिक शुभकामनाएं

परस्परोपग्रहो जीवानाम

अशोक सुराणा (CA)
मो. 9820147361
राष्ट्रीय सह-सयोजक-दान पेटी योजना
(अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ)
पूर्व उपाध्यक्ष- श्री साधुमार्गी जैन संघ, मुम्बई
संरक्षक- श्री चित्तौड़गढ़ जैन मित्र मंडल मुम्बई
राजकुमारी सुराणा
(महामंत्री-समता महिला मण्डल, मुम्बई)
अर्चित सुराणा (CA), तनिष सुराणा (MS in AI)

अशोक सुराणा एण्ड एसोसिएट
चार्टड अकाउटेन्टस
(मुंबई, चित्तौड़गढ़)
303, कल्याण भवन, तेली पार्क लेन, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400069
दूरध्वनि : 022-26833160, 022-266430287

!! ॐ अर्हम् !!

जय आचार्य भिक्षु जय आचार्य तुलसी जय आचार्य महाप्रज्ञ

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

हम रहें ना रहें गुरुवर तेरा आशीर्वाद रहे

Fateh Chand Begwani
Rakesh Chhajer
Mobile: 9844013386

Quality Thermopack
And Insulations Industries

17-P, KIADB Industrial Area, Bidadi, Phase- II, Sector-1,
Mysore Road, Ramanagara, Karnataka, Bharat - 582109
e-mail : qualitythermopack@gmail.com

२०२५-२८ सत्र हेतु तिनसुकिया दिगम्बर जैन पंचायत के चुनाव संपन्न
विजय जैन अध्यक्ष, पुखराज जैन सचिव बने

तिनसुकिया: श्री दिगम्बर जैन पंचायत तिनसुकिया के सत्र २०२५-२८ के लिए नई कार्यकारिणी के गठन हेतु चुनाव प्रक्रिया संपन्न हुई। १५ पदों के लिये संपन्न हुए इस चुनाव प्रक्रिया के दौरान कुल २२ उम्मीदवार चुनावी मैदान में थे, इसमें सहायक सचिव अजीत छाबड़ा एवं बिमल रारा व कोषाध्यक्ष नरेश सेठी निर्विरोध चुने गए। शेष अन्य १२ पदों के लिए मतदान प्रक्रिया असम के तिनसुकिया चेंबर रोड स्थित 'जैन भवन' परिसर में सम्पन्न हुई। मुख्य चुनाव अधिकारी के रूप में अजीत कुमार जैन, सीए मनोज जैन, सीए अंकुर जैन और सीए तंजय जैन रहे।

विजय जैन, अध्यक्ष

मतदान की प्रक्रिया सुबह ९.०० से दोपहर १२.०० बजे तक चली, इसके पश्चात दोपहर १.०० बजे से मतगणना का काम शुरू हुआ। मतगणना के बाद परिणामों की घोषणा की गई, अध्यक्ष के रूप में समस्त जैन समाज की एकता के लिए प्रयासरत अंतर्राष्ट्रीय जैन पत्रिका 'जिनागम' के प्रबुद्ध पाठक विजय कुमार जैन, उपाध्यक्ष के रूप में पवन पाटनी एवं बिनोद बज, सचिव पुखराज जैन निर्वाचित हुए, वहीं ८ अन्य उम्मीदवारों को कार्यकारिणी के सदस्य के रूप में चुना गया, इसमें अनिल जैन (मासू), विजय पहाड़िया, संजय कुमार पाटनी, बिनोद कुमार सेठी, संजय सबलावत, संजय कुमार पंड्या, सीए सुनील कुमार अजमेरा, सुनील रारा का नाम घोषित किया गया। मतदान प्रक्रिया के दौरान कुल ९२ वोट पड़े, इसमें से एक मत को रद्द घोषित किया गया।

अध्यक्ष पद पर जीत के बाद विजय कुमार जैन ने कहा कि उन्हें हमेशा से समाज का भरपूर प्यार और आशीर्वाद मिलता रहा है, इस बार जिस उम्मीद के साथ समाज ने उन्हें यह जिम्मेदारी दी है वे उसे पूरी तरह से समाज की उम्मीदों पर खरा उतारने की कोशिश करेंगे, साथ यह भी कहा कि जो नई टीम जीतकर आई है, वह काफी संतुलित और अच्छी है, उन्होंने मतदाताओं का तहे दिल से आभार भी व्यक्त किया, वहीं नवनिर्वाचित सचिव पुखराज जैन ने समाज के सभी लोगों का धन्यवाद करते हुए सभी के सहयोग की कामना की।

गौरतलब है की विजय कुमार जैन इसके पूर्व दयासागर जी महाराज के प्रवास के चातुर्मास समिति के कार्याध्यक्ष तथा बाद में अध्यक्ष के रूप में अपनी सेवाएं दे चुके हैं। विजय कुमार जैन के अध्यक्ष चुने जाने पर समस्त जैन समाज में बधाई दी है, इसके अलावा समाज की विभिन्न संस्थाओं व बुद्धिजीवियों ने उन्हें अपनी ओर से शुभकामना भी दी हैं।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत को 'भारत' ही बोला जाए
जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आदिनाथ का जन्म कल्याणक महोत्सव पर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पधारेंगे

जैन महाकुम्भ दिल्ली में २३ मार्च को

नयी दिल्ली: जैन परंपरा के प्रवर्तक, प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ का जन्म कल्याणक महोत्सव २३ मार्च को दिल्ली के लाल किला मैदान पर मनाया जाएगा। आदिनाथ जन्म कल्याणक सुबह ७ बजे रथ यात्रा और ८ बजे ध्वजारोहण के साथ प्रारंभ होगा। ५०१४ इंद्र केसरिया वस्त्र पहनकर तीर्थंकर का मस्तकाभिषेक करेंगे। मुनिश्री प्रतीक सागर के आह्वान पर हो रहे आयोजन में दिल्ली में विराजमान सभी आचार्य, उपाध्याय, मुनिराज और आर्यिकाएं मौजूद रहेंगी, समारोह में आचार्य अतिवीर महाराज की विशेष उपस्थित और गणाचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी महाराज का आशीर्वाद भी मिलेगा, मुख्य अतिथि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी रहेंगे।

गृह मंत्री अमित शाह, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता को भी आमंत्रित किया गया है। आयोजन दिगम्बर जैन जागरण युवा संघ मुंबई शाखा, दिल्ली प्रदेश एवं आदिनाथ जन्म कल्याणक महोत्सव समिति दिल्ली के तत्वावधान में होगा। आयोजन समिति में देशभर से लोग शामिल किए गए हैं।

मुनि-साध्वी बनना सिर्फ वेश परिवर्तन नहीं, जीवन परिवर्तन भी है

नोखा: माया की चकाचौंध से प्रभावित होकर सांसारिक भोग विलास के प्रति आकर्षित होना सामान्य बात है, ज्यादातर लोग ऐसी ही जिंदगी जीने के सपने पालते हैं, लेकिन ऐसा कम देखने को मिलता है, जब कोई व्यक्ति इस दुनियावी भोग विलास के जीवन को त्यागकर आध्यात्मिक जीवन में आगे बढ़ने के लिए वैराग्य को अपनाता है। राजस्थान के 'नोख' में नौ मुमुक्षु भाई-बहन ने सांसरिक जीवन के सुख का त्याग कर संयम व वैराग्य पथ पर अग्रसर होते हुए संन्यास दीक्षा लेकर मुनि साध्वी बन गए। समता विभूति आचार्यश्री नानेश की ओर से उद्घोषित 'नोखा' में महत्तम शिखर जैन भागवती दीक्षा महोत्सव भट्टड़ स्कूल में आयोजित किया गया, इसमें नौ मुमुक्ष भाई-बहनों की दीक्षा संपन्न हुई, आचार्य भगवन की ओर से सात दीक्षाएं उदघोषित थी और दो दीक्षाएं गुप्त हुई, सभी ने आचार्य रामलाल म.सा. के मुखारविंद से दीक्षा अंगीकार की, इससे पहले सुबह साढ़े नौ बजे मुमुक्षुओं के लोच एवं श्वेत वस्त्र धारण का कार्यक्रम हुआ, इसके बाद जयकारों के साथ सभी मुमुक्षु और परिवारजन प्रवचन स्थल पर पहुंचे। दोपहर १२.४५ बजे दीक्षा का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ, दीक्षार्थियों ने परिजन, समाज और साधु मंडल से दीक्षा की अनुमति ली।

आयोजन के दौरान आचार्यश्री रामलाल म.सा. ने प्रवचन में दीक्षा का महत्व बताया। भौतिक चकाचौंध से संयम जीवन में आना मुश्किल है, संयम मार्ग पर चलना भी दुष्कर है। मुनि-साध्वी बनना सिर्फ वेश परिवर्तन नहीं, जीवन परिवर्तन है, वेश तो हम जन्मों से बदलते आ रहे हैं।

इन्होंने किया सहयोग

धार्मिक कार्यक्रम में 'नोखा' सहित देश के विभिन्न प्रांतों से पहुंचे समाज के हजारों लोगों ने सहभागिता निभाई। समता युवा संघ के अध्यक्ष राकेश पीचा ने 'जिनागम' को बताया कि जैन भागवती दीक्षा महोत्सव की व्यवस्थाओं में धनराज गोलछा, राजेंद्र बेद, सिकरचंद पीचा, भीवराज कांकरिया, उत्तम बेताला, निर्मल गोलछा, नवीन कांकरिया, मदन लुणिया, बाबूलाल कांकरिया, रवि कांकरिया, जितेंद्र कांकरिया, पीयूष भूरा, अमित लालवाणी, रजत संखलेचा, पंकज भूरा, गौतम कांकरिया सहित साधुमार्गी जैन संघ, युवा संघ, महिला मंडल, बालिका मंडल के पदाधिकारी व सदस्यों ने सहयोग किया।

देशनोक श्रीसंघ को चातुर्मास की स्वीकृति

जैन भागवती दीक्षा महोत्सव में आचार्यश्री रामलाल म.सा.ने २०२५ का चातुर्मास रखे जाने वाले सभी आगारों सहित देशनोक श्रीसंघ को स्वीकृति प्रदान की, इसकी घोषणा करते ही समाज में हर्ष की लहर दौड़ गई, मुमुक्षु बहन मुस्कान सेठिया (मूल गंगाशहर-भीनासर, निवासी हावड़ा) की जैन भागवती दीक्षा ३० अप्रैल को गंगाशहर-भीनासर में होने की उद्घोषणा हुयी।

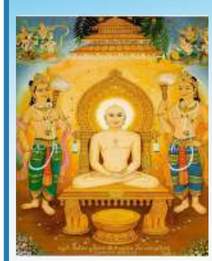

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर
हार्दिक शुभकामनाएं

विनित चांदवाड़
Mob: 9314037392, 9828021195

चांदवाड़ फाइनेन्स ब्रोकर/प्रॉपटीज़

श्रीमती ललिता देवी चांदवाड़ धर्मपत्नी स्व. बृजेश कुमार चांदवाड़,
वरूण-सोनिया, विनीत-रश्मि (पुत्र-वधु), वंश, रूहिका, भव्य, भावित,
चांदवाड़ परिवार, सिद्धार्थनगर, जयपुर

७६९, बोरडी की रास्ता, किशन पोल बाजार,
जयपुर, राजस्थान, भारत-३०२००४
निवास : ए-८६, सिद्धार्थ नगर, टोंक रोड,
जयपुर, राजस्थान-३०२०१७

सारा जमाना पदम जैन का दीवाना

हजारों परिवारों को रिश्तों में जोड़ने वाले पदमचंद जैन का हर कोई दीवाना

वैवाहिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में सुप्रतिष्ठित पदमचंद जैन की आज दुनिया दीवानी है। दुनिया जिन उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों की दीवानी है, वे सारे पदमचंद जैन के दीवाने है। और हो भी क्यों नहीं? आखिर देशभर में अब तक नामी-गिरामी परिवारों को आपस में वैवाहिक रिश्तों में जोड़ने का कीर्तिमान जो स्थापित किया है। जयपुर में एक शादी के आयोजन में जीतो के श्रेष्ठीवर्य से मुलाकात हुई। इनमें तारक मेहता का उल्टा चश्मा के फेम शैलेष लोढा, शेयर मार्केट के दिग्गज मोतीलाल ओसवाल, प्रमुख बिल्डर सुभाष रूणवाल, सेलो ग्रुप के प्रदीप राठौड, इन्स्पीरा के प्रकाश जैन, डॉ. सुरेन्द्र जैन युएसए, प्रकाश कानुगो, तेजराज गुलेच्छा, किशोर खाबिया, राकेश मेहता, शांतिलाल कवाड़, संदिप बाफना सहित अनेक दिग्गजों से मुलाकात हुई। पदमचंद जैन ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी का आत्मीय स्वागत किया। रूणवाल परिवार में वैवाहिक आयोजन के अवसर पर परिवार को बधाई दी। पूरे भारत में ओसवाल जैन बच्चों के वैवाहिक बायोडेटा के लिए पदमचंद जैन एक जाना-माना नाम है। राजनीति, प्रशासनिक, समाजसेवी, ब्यूरोक्रेटस उद्योगपति, सहित हर क्लास परिवार के बच्चों के बायोडेटा उपलब्ध है। सच में इतनी दीवानगी देखी नहीं कहीं। हर जुबां पर पदमचंद जैन का नाम।

■ आपके सपनों को पूरा करने वाली टीम ■

आईजेवीओ यानी पदम परिवार की यह टीम आपके बच्चों के लिए तलाशती हैं एक-से-बढ़कर एक सुंदर रिश्तों वाला बायोडाटा

दुल्हन वही जो पिया मन भाए, बहु वही जो सास मन भाए

रिश्तों के बेताज बादशाह **पदमचंद जैन**

॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

रिश्तों का मंडप आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

9314510196 / 9602623456

FCP JITO
पदमचंद जैन

प्रोफेशनल, सीए, पायलट इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना

1 जून से 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

IJ VO **जैन - वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव**

एक छत के नीचे उपलब्ध सेवाएं

वैवाहिक-रोजगार, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प, प्रशासनिक एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी सहयोगी

इंटरनेशनल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन
1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626

अपनों से हो अपनों का रिश्ता

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरंतर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर फीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते हैं। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हो अर्थात प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सूक्ष्मता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते हैं। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आई पीएस हो या राजनीति, समाजसेवा के क्षेत्र से हो, देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है। संकोच नहीं, सम्पर्क करें : पदमचंद जैन -

सेवा के सरोकार
छात्रवृत्ति
मेडिकल शिक्षा
रोजगार
विधवा पेंशन
उक्त आवेदकों की जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

अशोक सिरोया	चंद्रराज सिंघवी	डॉ. प्रकाश गोलेछा	नरेन्द्र कुमार जैन	बसंत जैन	संजय जैन	सुरेन्द्र कुमार जैन
अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय अध्यक्ष	योजना मंत्री	राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.वि	राष्ट्रीय संगठन मंत्री	कोर्डिनेटर	राष्ट्रीय प्रचार मंत्री

सेवा के पथ पर अग्रसर टीम आईजेवीओ

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, वैभव लॉन के पास, हनुमान मंदिर के सामने, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04
फोन : 0141-2602626 / 4010196 email: neerapadamjain@gmail.com

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

विश्वहितैषी तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
'जैन एकता' का आर्तनाद करें

एक ऐसे तीर्थंकर का जन्म कल्याणक महोत्सव है, जिन्होंने सम्पूर्ण विश्व को शांती और कल्याण के सूत्र दिये, 'जियो और जीने दो' का सार्वभौमिक नारा दिया, इसलिए वे जैनों के ही नहीं विश्व के लिए महापुरुष हैं, उनके पुनीत जन्म कल्याणक पर्व इस वर्ष भी वही हर्ष, उसी उल्लास से हो, लेकिन अंध परंपरा ना हो, कुछ नया और अनूठा कार्य करके दिखाएँ, कैसे?

तो आइए परम पूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, सिद्धांत चक्रवर्ती, राष्ट्रसंत, गणाचार्य श्री 108 विराग सागर जी महाराज द्वारा प्रस्तुत किये गये विषय पर दिये गये महत्वपूर्ण बिंदुओं को पढें:

'तीर्थंकर महावीर स्वामी के जन्म कल्याणक पर्व पर प्रत्येक बैनर, पत्रिका व मन्दिरों में लिखा जाए:

- यद्यपि आपके नगर में कत्लखाने, मांस-अंडे-शराब की दुकानें नहीं होना चाहिए, यदि हों तो इस पुण्य दिवस पर बंद कराने की अपील करें, सरकारी कानून में इस विषय का उल्लेख रहता है।
- जैनों को भी इस दिन दुकानें बंद रखनी चाहिए।
- तीर्थंकर की रथयात्रा, पालकी जहाँ से निकले वहाँ स्वच्छता रखने का प्रयास करें, मार्ग में गंदी नलियाँ वगैरह को साफ करवायें।
- स्वयं नये कपड़े तो जरुर पहनें पर मन्दिर के शिखर पर नयी ध्वजा भी लगायें।
- वात्सल्य भोज तो रखें पर रात्री भोज नहीं।
- जुलूस में एक साथ समय पर उपस्थित हों, ताकि जनमानस भी देखे कि तीर्थंकर महावीर के भक्त तथा उनके प्रति श्रद्धा-भक्ति समर्पण और त्याग का जयघोष।
- वर्ष में एक बार शिखर पर रंग तथा दरवाजों पर सजावट अवश्य होनी चाहिए।
- अपने घर के ऊपर धर्म ध्वजा लगाएं एवं मन्दिर जी व घर के बाहर तोरण द्वार बाँधे तथा रंगोली बनायें।
- मन्दिर के शिखरों से प्रात: से ही भगवान महावीर स्वामी के भजन (रिकॉर्ड या सी.डी. वगैरह अनुशासनुसार) गूँजना चाहिए ताकि पता चले कि आज 'महावीर जनकल्याणक' पर्व है।
- जुलूस में चमड़े के बेल्ट, जूते, पर्स वगैरह का प्रयोग न करें।
- महिलाएँ श्रृंगार करें, कोई परेशानी नहीं है पर नेल पॉलिश व लिपिस्टिक आदि का उपयोग न करें।
- सभी पुरुष सफेद ड्रेस में व महिलाएँ केशरिया साड़ी में पर्व पर उपस्थित रहें।
- धर्म ध्वजाएँ बच्चों के हाथ में नहीं, युवाओं के हाथ में दें।
- जूते-चप्पल पहन कर भगवान की पालकी, रथ की पालकी एवं रथ व धर्म ध्वज को हाथ ना लगाएं।
- ड्रेस के साथ-साथ मन भी सफेद हो, आपस में झगड़े-झंझट न कर समाज प्रमुख का निर्णय एकमत से स्वीकार करें।
- चाहे कोई किसी धर्म जाति या संप्रदाय का क्यों न हो, किसी को पराया या भिन्न ना समझें, जब तीर्थंकर के समवशरण में तिर्थंच भी अपनत्व से बैठ सकते हैं तो फिर क्या हम मनुष्य होकर एक साथ बैठ या चल नहीं सकते।
- तीर्थंकर महावीर स्वामी का अभिषेक पूजन सामूहिक हो, पर इतने उत्साह व सुमधुर ध्वनि से करें कि पांडाल गूंज जाए।
- सभी के हाथ में पूजा की पुस्तक अवश्य हो।
- सार्वजनिक/सांस्कृतिक कार्यक्रम करना अच्छी बात है पर व्यवस्थित करना और अच्छी बात है
- मन्दिर के बाहर कार्यक्रम हो तो विशेषकर समय का पूरा ध्यान रखें।
- समाज के व्यक्तियों का सम्मान बाद में हो या ना भी हो, लेकिन बाहर से आये व्यक्ति का सम्मान जरुर करें।
- लंबा-चौड़ा सम्मान आवश्यक नहीं, प्रेम का एक तिलक भी बहुत बड़ा सम्मान है
- अन्य कोई कार्यक्रम हो या न हो, पर तीर्थंकर महावीर स्वामी के जीवन दर्शन को जान लिया तो साल भर शास्त्र पढ़ना सार्थक हो जाएगा।
- इस शुभावसर पर शीर्षस्थ संस्थायें (महासभा, महासमिति, तीर्थ क्षेत्र कमेटी आदि) राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री को अन्तर्राष्ट्रीय सकल जैन समाज की ओर से 'महावीर जन्म कल्याणक' की बधाईयाँ अवश्य दें, साथ ही तीर्थंकर महावीर स्वामी के चित्र के समक्ष उनके द्वारा दीप प्रज्वलन करायें तथा उनसे तीर्थंकर महावीर स्वामी के प्रति शुभ संदेश व संस्तुति प्राप्त कर, उसका व्यापक प्रचार-प्रसार करें।
- समाज के प्रमुख संगठन व मंडल, प्रांतीय स्तर पर भी मुख्यमंत्री, सांसद, विधायक, कलेक्टर, नगराध्यक्ष, सरपंच **शेष पृष्ठ ४२ पर...**

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

जय आत्म आनंद देवेन्द्र शिव-जय अम्बेश सौभाग्य मदन-जय कोमल- जय गुरुणी प्रेम

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

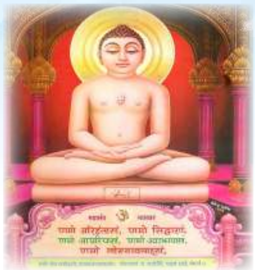

Jain Surendar Kumar Anchaliya

निवर्तमान महामंत्रीः श्री ऑल इंडिया जैन कान्फ्रेंस, कर्नाटक शाखा

Mob : 9886186528

Shanti Jewellers

A-7 1st Floor, Sakalaji market, Avenue Road,
Bangalore, Karnataka, Bharat-560002

स्व. श्रीमती जेठाबाई
ग्यारहवीं पुण्य स्मरण दिवस

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म
कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

G पुखराज मेहता (देवगढ़) बेंगलोर

राष्ट्रीय उपाध्यक्षः श्री आल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस, नई दिल्ली
अध्यक्षः मेवाड़ पॅलेस बेंगलोर

Mob. : 09844677725

Anand Jewels & Diamonds

A Trusted Name in Jewellery

Exclusive Range in
916, KDM GOLD, Diamond, Silver

1/1, Magadi Main Road, Jai Muni Rao Circle
Agrahara Dasarahalli, Bangalore, Karnataka, Bharat- 560079
Ph: 080-23304 343, 41734051 | Mob.:- 9844446064

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

MANOJ JAIN
Mob.: 9375183653

NAIVE JAIN
Mob.: 7874972678

Manoj® SILK MILLS

Regd. T.M. No. 1519771

EVERY FABRIC COUNTS

Mfg Of Dyed & Digital Printed Fabrics With
Value Addition And Embroidery Garment

GSTIN : 24ACYPJ2472M2ZY

Manoj® SILK MILLS

SALES : E-5670-71 Lift No 17, 3rd Floor,
Raghukool Textile Market, Ring Road, Surat.

E-mail : manojsilkmills5670@gmail.com

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर

हार्दिक शुभकामनाएं

ARHAM POLYCHEM PVT. LTD.

2, Raja Woodmount Street, 3rd Floor,
Kolkata, West Bengal, Bharat-700001
Tel. : 033-22434400
Email : arham.kka@gmail.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ ४० से... आदि प्रमुख व्यक्तियों से तीर्थंकर महावीर स्वामी के शुभ संदेश तथा संस्तुतियाँ प्राप्त कर प्रचार-प्रसार करें।

● देश-प्रदेश में प्रकाशित होने वाले अखबार व जैन पत्र-पत्रिकाओं में इस अवसर पर तीर्थंकर महावीर स्वामी के जीवन परिचय अथवा विभिन्न संदेशों को अवश्य प्रकाशित करवायें।

● टी.वी. चैनल द्वारा भी महावीर स्वामी के उपदेशों का प्रचार-प्रसार करें।

● औद्योगिक, प्रशासनिक, शैक्षणिक संस्थायें भी इस अवसर पर तीर्थंकर महावीर स्वामी के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन-पुष्पार्जन कर उनके संदेशों का स्मरण कर शुभ भावना प्रकट करें।

● सभी से अभिवादन 'जय जिनेंद्र' के साथ 'जय भारत' से करें।

● इस पुनित अवसर पर स्कूल, अनाथालय, हॉस्पिटल, जेल अथवा गरीबों को भी भोजन या मिष्ठान्न वितरण कर सकते हैं।

● जुलूस में प्रभावना अवश्य करें, पर ध्यान रखें, झूठी सामग्री जिन-रथ के मार्ग पर न डालें।

● वात्सल्य-भोज में भले ही शामिल ना हों पर तीर्थंकर के जुलूस में अवश्य उपस्थित हों।

● इस अवसर पर अतिथि सम्मान शॉल के स्थान पर महावीर स्वामी की फोटो से करें।

● हम भले ही अल्पसंख्यक हों पर परिजन व इष्ट मित्रों को भी साथ लेकर चलें वे चाहें जैन हो या जैनेत्तर।

● समाज के विभिन्न वर्ग एवं मंडलों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम झांकी, एकांकी, नाटक, निबंध, भाषण प्रतियोगिता का आयोजन करना चाहिए।

● आम सभा में महावीर स्वामी से सम्बन्धित प्रश्नमंच का आयोजन जरुर करें एवं पुरस्कार वितरण भी करें, उपस्थित जैनत्तर बंधुओं को इसमें प्रधानता दें।

● पालना, महाआरती, भजन संध्या आदि कार्यक्रम तो रखें पर यह भी ध्यान रखें कि प्रस्तुति देने वाले कलाकार मांसाहारी ना हो।

● प्रभात फेरी के समय महावीर स्वामी से संबंधित भजनों एवं नारों का ही प्रयोग करना चाहिए।

● तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर 'श्री महावीर विधान' का आयोजन भी करवा सकते हैं, अल्प समय में छोटे से विधान के साथ तीर्थंकर की भक्ति का अलग ही आनंद आयेगा।

इस तरह तीर्थंकर महावीर की पूजा और उससे भी बढ़कर व्यवस्था और अनुशासन भी एक पूजा ही कहलाएगी, सभी एक-दूसरे से जुड़ें, गले मिलें और कदम से कदम मिलाकर चलें, फिर देखें 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व का कितना आनंद आता है, कितनी सुख शांति की संवेदना होती है।

वीतराग भगवन्त!

करो ग्रन्थि से मुक्त मुझे हे वीतराग भगवन्त!
ज्ञान गौण, दर्शन अनुरंजन सर्वोपरि चारित्र,
मर्म मुझे दो आत्म धर्म का जीवन बने पवित्र,
करूं स्वयं पर अनुकम्पा मैं, पकड़ तुम्हारा पन्थ !
बन न सका नवनीत, मथ रहा कब से जाने तक्र?
कर समग्र अब छूटे मेरा जनम मरण का चक्र,
मुझे सताते हैं भव भव के बाँधे कर्म अनन्त !
नहीं समन्वय मुझ से मेरा छलना मेरे छन्द,
पूर्ण नहीं संवेदन, चलता प्रिय अप्रिय का द्वंद,
दो समत्व में तत्त्व समझ लूँ कृपा-सिन्धु अरिहन्त!

- महाकवि पद्मश्री कन्हैयालाल जी सेठिया (स्व.)

अहिंसा परिग्रह और अनेकांत की त्रिवेणी के वाहक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

गणाधि पति गुरुदेव श्री तुलसी

आचार्य महाश्रमण जी

Padam Chand Patawari
Mob: 9413319188

Shri Ram Nagar, 100ft Road,
Behind Kawadia Hospital, Rajsamand,
Bharat-313326 Mob. : 9950305599

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार
महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

पूरनमल जैन 'सेठी'
: पूर्व अध्यक्ष :
भगवान महावीर हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर, राँची
104, पारस अपार्टमेन्ट, कचहरी रोड, राँची, झारखण्ड, भारत- 834001
दूरध्वनि- 6201144633 भ्रमणध्वनि.-09431115535

भारत को 'भारत' ही बोला जाए   Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जीयो और जीने दो के विचारक तीर्थंकर महावीर के
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

HANUMAN MAL DUGAR JAIN

16-B, Robert Street, Ground Floor, Room No.2,
Kolkatta, West Bengal, Bharat-700012
दूरध्वनि : 033-22366360, Fax : 033-22379940
भ्रमणध्वनिः 09331037159
अणुडाक : hmdugar@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Kamal Doshi
Mob : 9830340967

SHREE SHUBHAM TOYS

48, Ezra Street, 5th floor, Room No 506,
Giria Trade Centre Kolkata - 700 001
Ph: +91 33 4061 9973 Email: arpit_toys@yahoo.in

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार
महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

गजेन्द्र जैन पाटनी
Mob: 9425251222/6917151222
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा
राष्ट्रीय महामंत्री
श्री भारतवर्षीय खंडेलवाल दिगम्बर जैन महासभा
कुनकरी, छत्तीसगढ़, भारत-496225

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार
महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

Dr. Jaiprakash Sethia
Mob: 9903086968/ 9831086968

Mahakavi Kanhaiyalal Sethia Foundation

KANHAIYALAL SETHIA AWARD for Poetry at JLF
Jaipur Literature Festival
Sethia Centenary Year 1919-2019

Model House, 40, Strand Road Suite No. 76,
Gr. Flr., Kolkata, West Bangal, Bharat- 700001
E: poetrysethia@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं
अशोक जैन Mob: 9993125178
प्रो. लवीश जैन Mob: 9340723048

महावीर ज्वेलर्स

सोने एवं चांदी के फेंसी आभूषणों के विक्रेता।

पता : शिवपुरी मोहल्ला, राम मंदिर रोड़ मूंदी,
जिला खण्डवा, मध्य प्रदेश, भारत - ४५०००१

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

भारत को 'भारत' ही बोलेंगे INDIA नहीं

डॉ. जयप्रकाश सेठिया
व्यवसायी व समाजसेवी
सुजानगढ़ निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९९०३०८६९६८

जयप्रकाश जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज मैं ८० साल का हो गया हूं और बचपन से ही इस विषय पर सुनते आ रहा हूं पर अभी तक यह संभव नहीं हुआ है और इस दिशा में कोई ठोस कदम भी नहीं उठाए गए हैं, यह असंभव भी है, क्योंकि यहां समाज के सभी संप्रदाय और पंथ अपनी-अपनी डफली और अपना-अपना राग बजाने में लगे हुए हैं तो समाज में 'एकता' कैसे स्थापित होगी, आज हमारा समाज पंथ और संप्रदाय में क्यों बटा हुआ है, इन्हें इकट्ठा करना कठिन कार्य है, क्योंकि समाज के जो भी वरिष्ठ लोग हैं, वह अपने पद और अहंकार को छोड़ना नहीं चाहते तो 'जैन एकता' कैसे स्थापित हो सकती है? आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से दूर हो रही है और इसका कारण समाज में फैला आडंबर, आज समाज में इतना आडंबर फैल चुका है और इतनी फिजूल खर्ची हो रही है, इसीलिए युवा पीढ़ी दूर हो रही है, धर्म का स्वरूप ही बदल गया है, यदि युवा पीढ़ी को जोड़ना है तो ऐसे क्रियाकलाप करने होंगे, जिसमें युवा पीढ़ी आगे आए और धर्म और समाज से जुड़े।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का नाम सिर्फ और सिर्फ 'भारत' ही रहना चाहिए। 'भारत' का शाब्दिक अर्थ है, 'भा' अर्थात प्रकाश, 'रत' अर्थात निरंतर बढ़ती रहे। भारत शब्द का अर्थ हुआ वह प्रकाश या ज्योति निरंतर बढ़ती रहे।

जयप्रकाश जी मूलतः तरह राजस्थान स्थित 'सुजानगढ़' के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'सुजानगढ़' में ही संपन्न हुयी है, आपका परिवार डेढ़ सौ सालों से 'कोलकाता' में बसा हुआ है, आप भी कई वर्षों से 'कोलकाता' में बसे हुए हैं और व्यवसाय से जुड़े हैं, साथ ही कई सामाजिक संस्थाओं से जुड़े हैं, आप एक कवि के रूप में भी सक्रिय हैं, आपके दादाजी रूपचंद सेठिया जी को श्रावक रत्न की उपाधि प्राप्त थी, उन्हें तीनों ही आचार्यों का आशीर्वाद प्राप्त था, आप महाकवि पद्मश्री कन्हैयालाल जी सेठिया के सुपुत्र हैं। जय भारत! **- जिनागम**

अशोक बम्ब जैन
निवर्तमान अध्यक्ष ओसवाल जैन श्री संघ, मुंदी
अजमेर निवासी-खंडवा प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९९९३१२५१७८

अशोक जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि अन्य समाज की तुलना में हमारा जैन समाज पूरी तरह से बिखरा हुआ है इसीलिए हमारी कोई बात राजनीति या सामाजिक स्तर पर नहीं सुनी जाती, अन्य समाज के लोग संगठित हैं, तो उनके कार्य आसानी से हो जाते हैं, हमारा समाज बिखरा होने के कारण हमें वह महत्व नहीं मिल पा रहा जो मिलना चाहिए, जबकि जैन समाज सबसे समृद्ध समाज है, पर पंथवाद के कारण ही हम पिछड़े हैं और आने वाले समय में यह पंथ और संप्रदायवाद हमें बहुत तकलीफ देगा, इसीलिए समय रहते समाज में एकता स्थापित हो जाए तो हमारे धर्म और समाज यानी दोनों का ही अस्तित्व बना रहेगा, इसलिए समाज में 'एकता' होना बहुत जरूरी है।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म समाज से दूर होती जा रही है, क्योंकि परिवार द्वारा उन्हें ना ही मंदिर ले जाया जाता है ना ही साधु संतों के पास ले जाया जा जाता है तो उनमें धर्म के प्रति जागृति कैसे निर्माण होगी, उन्हें परिवार से संस्कार ही नहीं मिलते, जिसे वे अपने धर्म से जुड़ सके, इसीलिए युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से विमुख होती जा रही है।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि अवश्य ही अपने देश का एक नाम-एक पहचान रहनी चाहिए 'भारत'!

अशोक जी मूलतः राजस्थान के अजमेर जिले में स्थित 'धनेरिया' के निवासी है, आपका परिवार कई वर्षों से मध्य प्रदेश के खंडवा जिले में स्थित 'मुंदी' तहसील का निवासी है, आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा यहीं संपन्न हुई है। यहां आभूषणों के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं। ओसवाल जैन श्री संघ मुंदी के अध्यक्ष रहे हैं, अन्य कई सामाजिक संगठन में यथासंभव सक्रिय रहते हैं। जय भारत! **- जिनागम**

बाबूलाल श्रीश्रीमाल

उपाध्यक्ष श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ मुंबई

जालोर निवासी-मुंबई प्रवासी

भ्रमणध्वनिः ९८२०२८६१५८

बाबूलाल जी 'जैन एकता' के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहते हैं कि आज जो परिस्थितियां बन रही हैं, उसमें समाज में एकता होना बहुत ही जरूरी है और समाज के सभी वर्गों व संप्रदायों को पंथवाद छोड़, धर्म व समाज को आगे बढ़ाने में अपना योगदान देना चाहिए, भले ही हमारी क्रियाएं अलग-अलग हैं पर सभी २४ तीर्थंकर को मानते हैं, उनके बताए मार्गों का ही अनुसरण करते हैं, फिर यह अलगाववाद क्यों, इन सब को छोड़ हमें 'जैन एकता' का प्रयास करना चाहिए, तभी हमारे धर्म और समाज का अस्तित्व बना रहेगा।

आज की युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से जुड़ी तो है पर निष्ठा के साथ नहीं जुड़ पा रही है, जितना जुड़ना चाहिए। युवाओं को समाज व धर्म से जोड़ना जरूरी है, इसके लिए समाज द्वारा विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया जाना चाहिए, तभी युवाओं को हम जोड़ सकते हैं।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि देश का नाम तो केवल 'भारत' ही रहना चाहिए, यही हमारे देश का प्राचीन और सांस्कृतिक नाम है।

बाबूलाल जी मूलतः राजस्थान के 'जालौर' जिले में स्थित 'केशवना' के निवासी हैं। आपका जन्म व सम्पूर्ण शिक्षा 'राजस्थान' में संपन्न हुई है, पिछले ४० सालों से आप 'मुंबई' में बसे हैं और कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक कार्यों में भी सक्रिय रहते हैं, श्री जैन 'श्वेताम्बर' खरतरगच्छ संघ मुंबई के उपाध्यक्ष हैं, अष्टापद जैन तीर्थ के कार्यकारणी सदस्य हैं, मरुधर कल्याण संघ के ट्रस्टी व उपाध्यक्ष की भूमिका निभा रहे हैं।

जय भारत!

- जिनागम

देश के संविधान में इंडिया नहीं भारत है मूल शब्द

प्रयागराजः शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के राष्ट्रीय संयोजक ए विनोद ने कहा की देश के संविधान में इंडिया नहीं, भारत ही मूल शब्द है। संविधान में लिखे गए वाक्य 'इंडिया दैट इज भारत' के मूल में वास्तविक शब्द 'भारत' ही है। लोग अपने तरीके से इसकी व्याख्या करते हैं, ये बातें ए विनोद ने इलाहाबाद हाईकोर्ट में शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास की महाकुंभ-२०२५ पर स्मारिका के विमोचन के अवसर पर कही।

भारतीय भाषा अभियान के राष्ट्रीय संरक्षक अपर महाधिवक्ता अशोक मेहता ने कहा कि विधिक शिक्षा में भारतीय न्याय मीमांसा जैसे विषयों को पढ़ाया जाना चाहिए। दिल्ली विवि ने विधि के पाठ्यक्रम में मीमांसा को शामिल किया है। अभियान के काशी प्रांत संयोजक अजय कुमार मिश्रा ने बताया कि न्यायालयों में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का प्रयोग बढ़ाने के प्रयास किए जा रहे हैं, इस मौके पर कुलवीर सिंह, धर्मेंद्र सिंह, पवन राव, अनूप मिश्रा, एसपी शुक्ला, प्रदीप जैसवार, अमन सिंह बिसेन आदि उपस्थित थे।

जीयो और जीने दो के विचारक तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

समाजरत्न

सुभाष ओसवाल जैन

Mob. :- 09810045440

चेयरमैन : ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली
अध्यक्ष : भगवान महावीर सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, रोहिणी, दिल्ली
अध्यक्ष : साऊथ दिल्ली, जैन समाज, नई दिल्ली
संरक्षक : अ. भा. श्वे. स्था. जैन श्रमण संघीय श्रावक समिति, नई दिल्ली
निर्देशक : महावीर देशना फाउंडेशन लिमिटेड, नई दिल्ली
ट्रस्टी : ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली

Resi.: C-642, New Friends Colony, New Delhi -110025
Golemarket No. 011-23363729, 23344380
Off. 011-23854400 Email : oswalsubash@gmail.com

संविधान की बुनियादी संरचना बदलने का अधिकार किसी को नही - जैनाचार्य युगभूषण सूरीजी

मुंबईः केसी कॉलेज मुंबई में आयोजित 'भारतीय संविधान की बुनियादी संरचना' विषय पर परिसंवाद में जैनाचार्य युगभूषण सूरीजी ने कहा कि पूर्ण सार्वभौमिकता और बुनियादी संरचना एक-दूसरे के कट्टर विरोधी है। केशवानंद भारती केस के फैसले में यह तय कर दिया गया कि सरकार के पास असीमित शक्ति नहीं है, इसलिए संविधान की बुनियादी संरचना बदलने का अधिकार किसी को नहीं है। भारतीय नीति-शास्त्र और धर्म-शास्त्र ने इसका सुंदर मार्गदर्शन किया है, जिसमें सभ्यता, न्याय, नीति, सदाचार, सद्गुण, मर्यादा, संस्कृति, धर्म और अध्यात्म शामिल हैं।

पूर्व लोकायुक्त और बॉम्बे हाई कोर्ट के न्यायाधीश एम. एल. तहल्यानी ने कहा कि मैंने पहली बार किसी आध्यात्मिक गुरु से कानून की इतनी विस्तृत व्याख्या सुनी है।

Intensive

• Investment Banking • NBFC • Family Office

~ Unique Advice. Capital Market Insight, Efficient Execution, Delivering Financial Growth

~~~ Our Services ~~~

- Public Issue (IPO)
- M&A / Strategic Acquisition
- Wealth Management & Advisory
- Right Issue / Buy-Back
- Takeover / Open Offer
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- QIP Placement
- Pre-IPO Placement
- Debt Syndication
- Amalgamation & Demerger
- Financial Engineering

Intensive Fiscal Services Private Limited

RO: - 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai –400021, India,
Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45, **Contact Person:** Virendra Bajaj +91 9699292100
Email: admin@intensivefiscal.com , Web: www.intensivefiscal.com
~~~

एक बार फिर से............................पधारो सा!

राजस्थानी संस्थाओं का मंच

आपणों राजस्थान

8 वें वर्ष में प्रवेश

मुंबई स्थित जे.बी.नगर में

(प्राचीनतम राजस्थानी परिसर)

२९-३० मार्च २०२५ शनिवार - रविवार

राजस्थानी गीत, संगीत, नृत्य, खान-पान, व्यंजन

के साथ लेंगे राजस्थानी व्यंजनों का आनंद

आयोजक

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत क्र. U80300MH2021NPL369101

मैं भारत हूँ फाउंडेशन

भारतीय संस्कृति की ओर अग्रसर

राष्ट्रीय अध्यक्ष बिजय कुमार जैन, मुंबई मो. 9322307908	राष्ट्रीय महामंत्री शोभा सादानी, कोलकाता मो. 8910628944	राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. गोविंद माहेश्वरी, कोटा मो. 9414183919	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष निशा लड्ढा, कोलकाता मो. 9830224300	पद्मश्री व प्रसिद्ध भजन गायक अनुप जलोटा, मुंबई मो. 9821069089
राष्ट्रीय सांस्कृतिक निर्देशक दिलिप सेन, मुंबई मो. 93228 66476	राष्ट्रीय सांस्कृतिक मंत्री रवि जैन, मुंबई मो. 8108843571	उत्तरांचल उप सभापति पूरण डावर, आगरा मो. 9837065440	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक अरूण मूँधड़ा, हॉस्टन, अमेरिका मो. 01(919)610-7106	अंतर्राष्ट्रीय संयोजक किशोर जैन, लंदन, यूके मो. 044 (770) 3827595

कार्यक्रम संयोजक

कार्यक्रम प्रमुख डॉ. दिनानाथ केडिया, मुंबई मो. 9820059564	कार्यक्रम संयोजक अनुपमा शर्मा (दाधीच), मुंबई मो. 97022 05252	स्वागत प्रमुख विमला समदानी, जे.बी. नगर मो. 9324560725	स्वागत प्रमुख सीमा बंसल जे.बी. नगर मो. 9821310077	स्वागत प्रमुख रश्मी जैन, जे.बी. नगर मो. 9699110506

मीडिया पार्टनर — दैनिक भास्कर मुंबई

मीडिया पार्टनर — जिनागम

मीडिया पार्टनर — मैं भारत हूँ

मीडिया पार्टनर — मेरा राजस्थान

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए INDIA नहीं

'एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th March 2025 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999
अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598